इस प्रकार वह स्वच्छ हो जाती है और 'टीप' (ley) में डाल डाल कर उस पर पालिश करते हैं। खड़िया और झाऊ के कोयलों से पालिश करना पड़ता है।

इसके पालिश करने की तरकीब यह है कि पहिले उसे रेत कर रंदा करके साफ़ कर ले फिर ग्लास-पेपर से रगड़े और बाद में झावे की बुकनी में कपड़ा तर कर कर के रगड़े इस से वह चिकनी हो जाती है। आखिर मे खड़िया से मांज कर पालिश कर लेते हैं।

Hornbeam (हार्नबीम)—एक क़िस्म का पेड़ जो योरोप में होता है। इसकी लकड़ी सफ़ेद, निहायत सख्त, चमचिचड़ और चिकनी होती है।

Horsehair (हार्स हेयर)—अयाल या घोड़े की पोंछ के बाल। इसका भी बहुत व्यापार है। अयाल से ज्यादा पोंछ के बाल की क़दर होती है। बाल काट कर वह चूने और पोटाश और साबुन के गर्म पानी में खूब साफ़ कर लिया जाता है और कभी कभी रंगा भी जाता है। इससे ब्रश, मोरछल, दस्ताने वग़ैरा बनते हैं और गद्दे व मसनद भरी जाती हैं।

Horse-Radish (हार्स-रेडिश)—सजीना. सहजना, मूंग अरक, सुरिंगा। इसका अंग्रेज़ी नाम Moringa Pterygosperm है। हिमालय की तराई में चनाब नदि से सूबा अवध तक के बीच में होता है और बंगाल व आसाम में बहुत ज्यादा होता है। इस पेड़ से एक प्रकार की गोंद भी निकलती है मगर काली हो जाने से ज्यादा काम नहीं आती। अलबत्ता इसके बीज से साफ़, चिकना और निर्मल तेल निकलता है। यह तेल घड़ीसाज़ी के काम में लाया जाता है। घड़ीसाज़ों के बड़े काम का यह तेल होता है। इसके सिवाय इसमें बड़ा गुण यह है कि खुशबू इसमें बहुत जल्द समा जाती है इस लिए अतर बनाने या खुश्बूदार चीज़ बनाने के बहुत काम की चीज़ है। इसका साग खाया भी जाता है।

इसी नाम का एक दूसरा बिलायती पेड़ Cochlearia Armorac[ia] है जिसकी जड़ को भी 'हार्स-रेडिश' (Horse-Radish) कहते [हैं]

यह पेड़ ग्रेट बृटन और योरोप में बहुत लगाया जाता है खास करके जरमनी में इसकी जड़ या मूल का अच्छा व्यापार होता है। इसकी जड़ बहुत अच्छी उत्तेजक दवा है और खसरा की बिमारी को दूर करती है।

Horses (हार्सेज़)—घोड़े, टट्टू, टांघन। इनका व्यापार दुनियां में सब जगह खूब होता है। घोड़ों की सब से अच्छी नस्ल 'अरबी घोड़ों' की गिनी जाती है। 'आस्ट्रेलियन घोड़े' बहुत बड़े और क़ीमती होते हैं। आस्ट्रेलिया के घोड़े और अरबी घोड़े लगभग ३० या ४० लाख रुपए के हर साल हिन्दुस्तान में आते हैं। हिन्दुस्तान में अच्छे घोड़ों की नस्ल बढ़ाने और क़ायम रखने के लिए सर्कारी. तौर पर मुहकमे याने स्टड·क़ायम किए गए हैं फिर भी उमदा नसलें हिन्दुस्तानी घोड़ों की अब नहीं मिलतीं जैसे लदाखी और कच्छी घोड़े अब कम मिलते हैं।

हिन्दुस्तान में ७ नस्ल के घोड़े गिने जाते हैं:—

(१) काठियावाड़ और राजपूताना के खेत—यह घोड़े काठी घोडों के नाम से मशहूर हैं। बड़ी बड़ी रियासतों में इनकी नस्ल बढ़ाने का क़ायदा जारी है। पहिले इसका ज्यादा रवाज था। भावनगर और पालीताना में अब भी घोड़े अच्छे होते हैं।

(२) बम्बई के खेत—यह घोड़े कच्छी और सिंधी कहाते हैं और काठियावाड़ी घोड़ों के बराबर के होते हैं मगर इनमें यह बड़ा ऐब होता है कि इनका मिज़ाज कडुआ और पाजी होता है। सूबा बम्बई में तीन ज़ात के टट्टू और भी होते हैं जो 'मराठी', 'गुजराती' और 'बिमथाड़ी' टट्टू कहाते हैं इनमें से भिमथाड़ी ज़ात के टट्टू सब से अच्छे होते हैं।

(३) वज़ीरी और बिलोचिस्तानी खेत। यह घोड़े बड़े तेज़, फुरतीले और मेहनती और मज़बूत होते हैं। फ़ौजी काम के बहुत अच्छे होते हैं।

(४) पंजाब के खेत। पंजाब के घोड़े कई ज़ात के और उमदा होते हैं जैसे 'रावलपिंडी के', 'झेलमी', 'गुजराती', 'गुंगेरा के', 'लाहौर के'।

इनकी नस्ल लेने का ख़ास शौक और इन्तज़ाम है। सिक्खों के ज़माने में घोड़ों की उमदा नसलें बढ़ाने का ख़ास इन्तज़ाम था। 'काठियावाड़ी', 'कच्छी', 'बिलोचिस्तानी', 'अफ़ग़ानिस्तानी' वग़ैरा घोड़े (सांड़) मंगा कर उनके बच्चे लिए जाते थे। पंजाब के घोड़े बहुत बड़े मेहनती होते हैं, यह वहीं का पानी है कि वहां के घोड़े कालका से शिमला तक ५८ मील एक दिन में तीन सवारी और असबाब लेकर इक्कों को पहाड़ों पर ले जाते हैं और उनका बाल तक बांका नहीं होता। सिक्खों के ज़माने में धन्नी के घोड़े बहुत मशहूर थे और अब भी नामवर हैं।

(५) बर्म्हा और मनीपुर के टांघन—'बर्म्हा के टांघन' छोटे, मेहनती, मज़बूत और सीधे होते हैं और 'मनीपुर के टांघन' सब से ज्यादा अच्छे होते हैं। बर्म्हा के टांघन रियासत शान से आते हैं।

(६) हिमालय के टांघन—यह टांघन 'घुंड' या 'खुंड' कहलाते हैं। यह छोटे, गठीले, मेहनती और मज़बूत होते हैं, इनका पैर इतना मज़बूत होता है कि कभी ठोकर नहीं खाते और खटखट करते हुए पहाड़ों के बीहड़ रास्तों में चलते हैं अलबत्ता सुस्त और मुंह-के-कड़े या मुंह-ज़ोर होते हैं। 'लाहौल के टांघन', 'स्पीती के टांघन' और 'नैपाल के टांघन' और 'भूटिया टांघन' मशहूर हैं। यह केवल ज़ीन सवारी क़ाबिल अच्छे होते हैं।

अफ़गानिस्तान के 'याबू' भी मज़बूत होते हैं और प्रायः अंग्रेज़ लोग टमटम मे जोतते हैं। 'बिलोचिस्तानी टट्टू' और 'काश्मीरी टट्टू' की भी गिनती अच्छे टट्टूओं में है।

(७) खच्चर—आसामी खच्चर भी अच्छे होते हैं। काठियावाड़ में 'हलर' या झालवाड़ के सफ़ेद रंग के खच्चर भी उमदा क़िस्म में हैं।

(८) गदहे—गदहों को धोबी, कुम्हार, चूहड़े वग़ैरा बोझ लादने का हिन्दुस्तान में पालते हैं। बीकानेर, कच्छ और पंजाब के पच्छिमी देश में उमदा क़िस्म के गदहे मिलते हैं।

यूं तो मामूली घोड़े और टट्टू कई ज़ात के और भी हिन्दुस्तान में होते हैं मगर ज्यादा मशहूर यही हैं जो ऊपर लिखे गये हैं।

घोड़ों की चरबी (Horse fat) से सफ़ेद साबुन बनता है। विदेशों से ५५.४८ लाख रुपए के घोड़े सन् १९०४-५ मे और २८.४३ लाख के सन् १९०८-९ में और ३३.०२ लाख के सन् १९०९-१० मे लाये गये।

Hosiery (होज़ियरी)—होज़ियरी। दस्ताना, मोज़ा, गंजी वग़ैरा का कारख़ाना या कारोबार। इसके कुल ३ कारख़ाने सन् १९०९ में यहां थे। यह चीज़ बाहर से ही ज्यादा आती है ख़ास कर जापान से। सन् १९०७-८ में कुल ६७२७०००) के, सन् १९०८-९ में ६३४५०००) के सन् १९०९-१० में ६९९२०००) के आये। सिर्फ़ जापान से ही लगभग ४६ लाख का माल आता है। ऊनी माल अलग आते हैं।

Hydraulic Cement (हाइड्रालिक सीमेंट)—Portland Cement देखो।

Hydrochloric Acid (हाइड्रोक्लोरिक एसिड)—नमक का तेज़ाब। यह एक बड़े काम का तेज़ाब है। यह गंधक के तेज़ाब और नमक से तयार किया जाता है। यह पानी में खूब घुल मिला जाता है। 'स्पिरिट आफ़ साल्ट' (Spirits of salts) या 'म्यूरियेटिक एसिड' (Muriatic acid) भी कहते हैं। छींट छापने, निखार और मेराई करने वग़ैरा में यह बहुत काम आता है।

चंद धातुओं का 'क्लोराइड' (Chloride) भी इसके संयोग से तयार होता है, जैसे जस्ते का क्लोराइड इत्यादि। सोना गलाने का शाही-तेज़ाब (Aqua regia) का यह एक ख़ास जुज़ है।

Hydrocyanic acid (हाइड्रोसायनिक एसिड)—इसे 'प्रूसिक एसिड' (Prussic acid) भी कहते हैं। यह बड़ी तेज़ ज़हर है। सूखे 'सायनाइड आफ़ मर्क्यूरी' (Cyanide of mercury) में 'सलफ्यूरेटेड हाइड्रोजन' (Sulphuretted of hydrogen) के संयोग से बनता है। इसमें कडुवे बादाम की सी महक रहती है। डबल सायनाइड आफ़

आयर्न व पोटाशियम् और 'यलो प्रूसियेट आफ़ पोटाश' में गंधक के तेज़ाब व पानी का संयोग देकर कशीद करते हैं।

Hydrofluoric acid (हाइड्रोफ्लोरिक् एसिड)—फ्लूराइड आफ़ कलशियम् और गंधक के तेज़ाब के संयोग से तयार किया जाता है। इस तेज़ाब को सीसे या गटापरचा के बोतल में रखना चाहिए। इसकी भाप से बचा रहना चाहिए नहीं तो जिस बदर्न पर इसकी भाप लगेगी फफोले पड़ जायंगे।

Hydrogen-Peroxide (हाइड्रोजन-परआक्साइड)—यह गाढ़ा, निर्मल, स्वच्छ और बेरंग का तरल पदार्थ है। इसमें गंध तो नहीं होती मगर स्वाद में कड़ुवा होता है। यह रंग साफ़ करने या धो डालने के काम में लाया जाता है। आयल पेंटिंग का रंग अगर मैला या मंदा हो जाय तो अलकोहल में इसे घोलकर लगा देने से वह फिर तेज़ हो जाता है।

Hydrosulphuric acid (हाइड्रोसलफ्यूरिक एसिड)—नमक का तेज़ाब या हलका गंधक के तेज़ाब का संयोग किसी धातु, (जैसे लोहा, सुरमा, बेरियम या स्ट्रांशियम) के सलफ़ाइड के साथ करके तयार किया जाता है। इस तेज़ाब की भाप के लगने से चांदी, सोना वग़ैरा स्याह पड़ जाता है, इसलिए इसकी भाप से उन्हें बचाए रखना उचित है।

Hyponitric acid (हाइपोनाइट्रिक एसिड)—इस तेज़ाब का रंग नारंजी होता है और इसकी गंदी महक से जी मचलाता है। 'एकुआ फॉरटिस' (Aqua fortis) में मिलाने से ज़र्द रंग का घोल बन जाता है।

I.

Ice (आइस)—बर्फ़, बरफ़, आइस, जमाई हुई बर्फ़ । आइस उस बरफ़ को कहते हैं जो मसाले के ज़ोर से पानी जमाकर तयार की जाती है और जो बर्फ़ सर्दी पाकर आकाश से गिरकर या झील वग़ैरा का पानी शीत के प्रभाव से जम जाता है उसे अंगरेजी में 'स्नो' (Snow) कहते हैं और हिंदी में हिम । आम तौर से इसे भी बरफ़ कहते हैं। एकही शब्द से इन दोनों में भेद नहीं प्रगट होता इसलिए जमाए हुए जल को बरफ़ और प्राकृतिक जमे हुए जल को हिम कहना उचित है।

यह सभी जानते हैं कि जमा हुआ जल गरमी पाकर फिर जल रूप हो जाता है और जल ज्यादा सरदी पाकर जम जाता है या यूँ कहें कि जब जल में से गरमी निकल जाती है तब वह जल जमकर बरफ़ की तरह ठोस हो जाता है। अब अगर ऐसी तरकीब लगाई जाय कि किसी प्रकार से पानी में की गरमी जलदी से उड़ा दी जाय तो वही जल झट जमकर 'बरफ़' हो जायगा । इसी सिद्धान्त पर बरफ़ जमाया जाता है । 'लिक्विड अमोनिया' (Liquid ammonia) या 'ईथर' (Ether) की भाप के उड़ाने से उसके साथ जल की गरमी भी निकल जाती है और वह जमकर बरफ़ बन जाता है । बरफ़ का व्यापार बहुत होता है । हिन्दुस्तान में इसके बहुत से कारखाने हैं. । सन् १९०९-१० में आइस व एयरेटेड वाटर की फ़ेक्टरियां १३ थीं ।

गरमी के दिनों में शौक़ीन लोग मलाई, दूध, आम वग़ैरा की कुलफ़ियां जमाकर बड़े शौक़ से खाते हैं । कुलफ़ी जमाने के मसाले यह हैं:—

(१) बरफ़ कुटा हुआ २ भाग, नमक १ भाग। (२) ५ भाग बरफ़, २ भाग नमक, १ भाग नौसादर। (३) १२ भाग बरफ़, ५ भाग नमक, ५ भाग नाइट्रेट आफ़ अमोनिया (याने शोरा व नौसादर) । (४) ८ भाग बरफ़ नमक का तेज़ाब ५ भाग ।

(५) सूखा मसाला—(क) २ सेर सलफ़ेट आफ़ सोडा, सवा सेर म्यूरियेट आफ़ अमोनिया और नाइट्रेट आफ़ पोटाश (Muriate Ammonia and Nitrate of Potash)। सम भाग और उतनाही पानी।

Iceland spar [आइसलेंड स्पार]—इसे 'काल्क स्पार' [Calc Spar] या 'कलसाइट' [Calcite] भी कहते हैं। यह एक क़िस्म का बिल्लौरी पत्थर या कांच सदृश पत्थर है जो प्रायः धातुओं [या धात्वाश्म] के साथ खानों में पाया जाता है। इसका विशेष गुण यह है, कि इसमें 'दोहरा प्रतिबिम्ब' (Double Refraction) याने 'द्विधावर्तन' होता है इस लिये एक उप-यन्त्र जिसे 'पोलराईज़िंग इंस्ट्रूमेण्ट' (Polarising instrumeut) कहते हैं बनाया जाता है।

Ignetius Beans (इगनेटियस बीन्ज़)—यह एक क़िस्म के पेड़ का बीज है जो कि फिलिपाइन टापू में होता है और इसमें 'कुचले' का सा गुण है। इसमें से कुचले का सत याने 'स्ट्रिक्निया' (Strychnia) निकाला जाता है।

Image (इमेज)—मूर्तियां, प्रतिमायें। देवी देवताओं की बहुत मूर्तियां हिन्दुस्तान में बनती हैं खास करके जैपुर व बनारस में। अब तो बिलायत और यूनाइटेड स्टेट से बहुत प्रतिमायें खासकर गणेश जी और बुद्धदेव की आने लगी हैं। पत्थर, मिट्टी, काठ या धात की मूर्तियां अधिक तयार होती हैं। अब सस्ते दामों की मूर्तियों की बिक्री ज्यादा रह गई है।

Indan Copal (इंडियन कोपाल)—Copal देखो।

Indian Corn (इंडियन कॉर्न)—Maize जोन्हरी देखो।

Indian Ink (इंडियन इंक)—Ink देखो।

Indian Maeogany (इंडियन महोगनी)—Mahogany देखो।

Indian Rubber (इंडिया रबर)—Caoutchouc देखो।

Indigo (इंडिगो)—नील। सूबा बंगाल व बिहार में नील की कास्त

बहुत की जाती है, अन्य सूबों में भी थोड़ी बहुत काश्त होती है । इस में से 'नील-बड़ी' निकाली जाती है जिसका बहुत व्यापार नीला रंगने के लिए होता है । नील के पेड़ और पत्तियों को काटकर पक्के 'हौज़, या 'हौद' में भरकर पानी में १२ से २४ घंटे तक डुबा रखते हैं । पानी का रंग जर्दी मायल सब्ज हो जाता है और उसमें बबूले या फेन उठ आती हैं । तब नल खोल देते हैं, यह पानी दूसरे हौद में जो नीचा होता है भर जाता है । कुली लोग इस होज में उतर कर पानी को 'बिलोते' हैं याने हाथों से या डंडे से पानी को प्रायः १½ घंटे तक पीटते हैं फिर छोड़ देते हैं । पानी में दूसरे दिन 'माल' याने नील की गाद नीचे बैठ जाती और पानी जिसे 'मैला पानी' बोलते हैं, ऊपर रह जाता है । इस पानी को निकाल कर 'माल' को गोदाम में साफ़ पानी के साथ उबालते हैं और तब छान और सुखाकर उसकी 'गिट्टियां' या 'बड़िया' बना लेते हैं । एक तरीका नील निकालने का और भी है उसे 'ड्राइ प्रोसेस' (Dry Process) कहते हैं मगर यह ज्यादा रायज नहीं है । नील की दो फ़सिल होती है एक 'चैती' या 'जमौआ' और दूसरी 'असाढ़ी' । अब बनावटी नील बनाई जाने लगी है, जिससे असली नील के व्यापार को नुक़सान पहुंचाने का डर हो गया है । ऐसा देखने में भी आता है कि इसकी काश्त और माल की चलान घटती जाती हैं ।

सन् १८९९-१९०० में इसकी काश्त का रकबा १०,४६,४३४ एकड़ था ५ साल बाद १९०३-४ में ७,१२,०४९ एकड़ रह गया, फिर दूसरे ५ साल बाद १९०७-८ में ४,०५,९०५ एकड़ तक घट गया और सन् १९०८-९ में २,८६,३५४ एकड़ में इसकी काश्त हो गई ।

असल नील की मांग कम हो जाने से ही काश्त में कमी हुई। यह बात माल के चलान से भी साबित होती है जिसकी तफ़सील ५ साल की यह है:—

१९०६-७ में ७०,०५,००० रुपये की रवाना हुई थी ।
१९०७-८ में ६३,७३,००० ” ”
१९०८-९ में ४९,८५,००० ” ”

१९०९-१० में ३५,१८,००० रुपए की रवाना हुई थी।
१९१०-११ में ३३,५३,००० ,, ,,

गर्ज़ेकि गए दस साल के अन्दर इसकी रवानगी की मालियत ८४·३ फी सदी घट गई याने चौथाई से भी बहुत कम रह गई है।

Ink (इन्क)—रोशनाई, स्याही, काली। लिखने या छापने के लिये जो रंगीन चीज़ बनाई जाती है उसे रोशनाई कहते हैं। लिखने की रोशनाई पतली होती और छापने की रोशनाई लसदार और गाढ़ी होती है। रोशनाई बनाने के कई नुसखे हैं लेकिन सबसे अच्छी और सीधी तरकीब काली रोशनाई बनाने कि यह है कि माजूफल के काढ़े में थोड़ी गोंद और कसीस मिला दे। ज़रा सा 'क्रियेसोट' (Creasote) या 'कारबोलिक एसिड' (Carbolic acid) मिला देने से रोशनाई बदबू न करेगी और उसमें गुट्ठल न पड़ेंगे।

लिखने की रोशनाई।

लिखने की स्याही न इतनी पतली हो कि फीका लिखा जाय और न इतनी गाढ़ी हो कि क़लम न चले। जो रोशनाई लिखने में फैल जाती है वह खराब है। उमदा रोशनाई उसी को कहना चाहिए कि जिससे सहज में लिखा जा सके, सरलता के साथ चले और फैले भी नहीं और जिस पर उस से लिखा जाय वह रोशनाई को पैवस्त करले। लिखने की स्याही कई रंगों की होती हैं जैसे काली, लाल, आसमानी, बैजनी वग़ैरा। गो कि 'हिन्दुस्तानी रोशनाई' ज्यादा चमकदार, स्याह और बहुत दिनों तक क़ायम रहनेवाली होती है परन्तु अब अंगरेज़ी रोशनाई की चलन ज्यादा हो गयी है। चंद नुसखे रोशनाई बनाने के नीचे दिए जाते हैं:—

नुसखे—(१) स्याह रोशनाई (Black writing ink)—१ रतल माजूफल को कूट कर उसमें १ गेलन उबलता हुआ पानी मिलावे और उसमें ५$\frac{1}{3}$ औंस कसीस (पानी में घोलकर) और ३ औंस बबूल की गोंद (यह भी पानी में घुली हुई हो) मिलाकर चंद कतर लवंग के तेल के या लवंग कूटकर या कारबोलिक एसिड मेथिलेटेड स्पिरिट

में मिला हुआ 'क्रियोसेट' (Creosate) डालदे। एक दिन रात भीगा रखने के बाद छान ले।

(क) १२ रतल 'अऌपो का माजूफल' लेकर और कूटकर ६ गेलन मीठे पानी में १ घंटे तक उबाले ज्यूं ज्यूं पानी जलता जाय और पानी मिलाता जाय। छानकर उस बचे माजू को फिर ४ गेलन पानी में $\frac{1}{2}$ घंटा उबाले, और छान ले और फिर उसी माजू को २$\frac{1}{2}$ गेलन में तीसरी बर उबाले। छानकर इन तीनों उबाले हुए माजू के पानी को मिला लेवे। उस में ४$\frac{1}{2}$ रतल कसीस कूट कर और ४ रतल बबूल की गोंद के टुकड़े डालकर बिलोवे और जब सब घुल मिल जायं तब घोड़े के बाल की चलनी से छान ले। यह उमदा रोशनाई १२ गेलन तयार हो जायगी।

(२) कापीइंग इंक (Copying Ink) - १५ छिटांक उक्त स्याह रोशनाई में १ औंस शक्कर घुला लेने से मामूली इंक तयार हो जाती है। इसमें प्रेस से छापने की ज़रूरत नहीं पड़ती सिर्फ पतला काग़ज़ गीला करके लिखे हुए काग़ज़ पर रखकर चाकू के चिकने बेंट से रगड़ देने से नक़ल उतर आती है।

(क) लागउड (Logwood) का काढ़ा ३० ग्रेन, सोडा के डले ७ ग्रेन, पानी $\frac{1}{2}$ औंस मिलाकर उबाले जब सब घुल जायं तब उसमें ३० ग्रेन ग्लिसरिन (Glycerine), १ ग्रेन क्रोमेट आफ़ पोटाश (Chromate of Potash) पानी में घुला हुआ और ४ ग्रेन बबूल के गोंद की बुकनी मिलाकर रोशनाई तयार करे।

(३) ब्लू-ब्लाक इंक (Blue-Black Ink)—४$\frac{1}{2}$ औंस आसमानी अलीपो माजू जिसमें कीड़े वगैरा न लगे हों, १ ड्राम लवंग कुटी हुई और ४० औंस ठंडा पानी, १$\frac{1}{2}$ औंस साफ़ कसीस, ३५ बूंद गंधक का तेज़ाब, नीलबड़ी की लुबदी $\frac{1}{8}$ औंस। एक बड़े घड़े में माजू कूटकर और लवंग रखकर पन्द्रह दिन तक पानी में तर रक्खे फिर मसल करके निचोड़ ले, इस में कसीस डाले और एसिड मिलाकर बिलोवे, अन्त में नीलबड़ी मिलाकर ब्लाटिंगपेपर से छान ले।

(४) बुकनी (Ink powder)—४ औंस माजू की बुकनी, १ औंस कसीस की बुकनी, १ औंस गोंद, ½ औंस सफ़ेद चीनी, १ ड्राम लवंग चूर्ण। इन्हें मिलाकर सफ़ूफ़ तयार करें। १¼ सेर पानी के लिए यह सफ़ूफ़ काफ़ी है।

(क) ३ रतल अलीपो का माजूफल, १ रतल कसीस, ½ रतल गोंद बबूल, ½ पाव चीनी सफ़ेद। इन सब को मिला कर बुकनी तयार करे। २ औंस बुकनी १० छिटांक पानी में डालने से नफ़ीस रोशनाई बन जायगी।

(५) अदृश्य मिस (Invisible Ink)—नाइट्रेट आफ़ सिलवर में पानी मिलाकर लिखने से सूखने पर वह अदृश्य हो जायगी और जब सल्फ़ेट आफ़ अमोनिया पर काग़ज़ रक्खा जायगा तब लेख पढ़ा जा सकेगा। (क) प्याज़ के अर्क़ से लिखने पर भी अदृश्य लेख रहेगा और आंच दिखाने पर ज़र्द रंग हो जायगा।

(ख) म्यूरियेट आफ़ कोबाल्ट (Muriate of cobalt) का लेख भी अदृश्य रहेगा आंच दिखाने पर स्पष्ट होगा।

(ग) तूतिया और नौसादर सम भाग पानी में घोल कर लिखे। आंच दिखाने पर ज़र्द रंग ग्रहण कर लेगा।

(घ) १ औंस नाप से गंधक का तेज़ाब लेकर पानी मिलाकर हलका कर ले और खूब बिलोए, ठंडा होजाने पर काम में लावे। आग पर गरमाने से स्पष्ट पढ़ा जायगा।

(६) लाल रोशनाई (Red Ink)—ब्राज़ील उड ४ औंस और सिरका ३० छिटांक। इन्हें उगाल कर अधौट करले तब इस में ३ औंस फिटकरी मिला ले।

(क) लाल चन्दन और फिटकरी व पानी।

(ख) ३२ औंस पानी मे २ औंस ब्राज़ील उड को उबाले और छान कर उस में ½ औंस 'क्लोराइड आफ़ टिन' (Chloride of tin), १ ड्राम गोंद मिलाकर गाढ़ा कर ले।

(ग) २ भाग 'ब्राज़ाल उड' (Brazil wood), ½ भाग फिटकरी, ½ भाग क्रीम आफ़ टारटार, १६ भाग पानी अधौट करके उसमें ½ भाग गोंद मिला दे।

(घ) १ औंस 'किर्मदाना' (Cochineal) को ५ छिटांक गर्म पानी में घुलावे, ठंडा होजाने पर २½ छिटांक (Spirit of Hartshorn) 'स्पिरिट आफ़ हार्टहार्न' मिलाकर कई दिन पड़ा रहने दे फिर निथार कर काम में लावे। यह उमदा लाल स्याही होगी।

(ङ) २० ग्रेन शुद्ध कारमाइन रंग को ३ फ्लुइड औंस अमोनिया के अर्क़ (Liquid ammonia) में घोल कर १८ ग्रेन गोंद की बुकनी मिलाने से उमदा सुर्ख़ रोशनाई तयार होगी।

(७) 'काही रंग की स्याही' (Green-black Ink)--१५ भाग माजूफल को २०० भाग जल में उबाले १ घंटे तक और छान कर उसमें ५ भाग कसीस, ४ भाग लोहचुन, और ५ छिटांक नील व ३ भाग तेज़ाब गंधक का घोल मिलाने से तयार होगी। लिखती वक्त इसका रंग सब्ज़ होगा फिर स्याह पड़ जायगा।

(८) सब्ज़ रोशनाई--ज़ंगार २ औंस, क्रीम आफ़ टारटार १ औंस, पानी ५ छिटांक उबाल कर अधौट करे और छान ले।

(क) हरा रंग को फिटकरी के पानी में मिलाने से भी यह तयार होती है।

(९) आसमानी स्याही (Blue Ink)—५ सेर पानी में २ या ३ औंस नील बड़ी घुला ले।

(क) 'चाइनीज़ ब्लू' (Chinese blue) २ औंस, उबलता पानी २½ सेर, आक्ज़ालिक एसिड १ औंस। पहिले रंग को घोले तब तेज़ाब मिलावे।

(१०) कपड़े पर चिन्ह बनाने की स्याही (Marking ink)—२२ हिस्सा कारबोनेट आफ़ सोडा को २५ भाग साफ़ पानी में घुलावे। फिर १७ भाग ख़ुश्क नाइट्रेट आफ़ सिलवर को २४

भाग अमोनिया में अलग घोल ले। २० भाग गोंद व ६० भाग पानी का घोल अलग तयार करके सोडा के घोल में मिलावे और तब नाइट्रेट आफ़ सिलवर का घोल मिलावे और आखिर में ३३ भाग कसीस मिलाकर तयार कर ले।

(११) पत्थर या संगमरमर पर लिखने की स्याही—'ट्रिनिडाड स्फाल्टम्' (Trinidad asphaltum) और तारपीन का तेल सम भाग। इनको गला कर काम में लावे।

छापे की स्याही बनी बनाई हर क़िस्म और रंग की किफ़ायत में मिल जाती है इसलिए उनकी तरकीबें लिखना उचित न समझा गया। अलबत्ता लिथोग्राफ़ी पर छापने के लिए जो स्याही काग़ज़ पर लिखने की बनती है उसका नुसखा यह है (१) ८ औंस मस्तगी के दाने, १२ औंस उमदा लाख और १ औंस वेनिस का तारपीन आपुस में मिला ले और टिघला कर तब १ रतल मोम और ६ औंस चरबी मिलावे जब यह सब घुल कर एक जान होजायं तब ६ औंस चरबी का साबुन छील कर मिलावे बाद में ४ औंस काजल मिला कर ठंडा करके जमने दे और इनकी टिकियां काट ले।

Iodine (आयोडीन)—आयोडीन। यह एक प्रकार का रासायनिक द्रव्य है जो दूसरे द्रव्यों के साथ मिला जुला मिलता है। पहिले यह एक क़िस्म की समुद्र की घास की राख या खार से निकाला जाता था पर अब फ्रांस और इंगलेंड की खारी मट्टी से निकाला जाता है। चिली देश में एक प्रकार की मट्टी है जिससे शोरा भी तयार होता है और उसके 'नाइट्रेट आफ़ सोडियम' (Nitrate of Sodium) अंश में से 'आयोडाइड आफ़ सोडियम' (Iodide of Sodium) निकाल कर आयोडिन बनाते हैं। आयोडिन का काला रंग और कण चप्पड़दार होता है। इसकी महक विचित्र और स्वाद कड़ुआ होता है। आयोडीन फ़ोटोग्राफ़ी और दवा में बहुत काम आता है।

Iridium (इरीडियम)—इरीडियम। यह एक नए क़िस्म का चांदी के रंग का बहुत ज्यादा भारी धात है जो बड़ी कठिनाई और लागत से निकाला जाता है। यूरल पहाड़ में पाया जाता है, यह धातु सफ़ेद

बहुत सख्त और तड़क-जाने-वाला होता है और इस पर कोई तेज़ाब असर नहीं करता, अलबत्ता जब दूसरे धातुओं के साथ मिला रहता है तब 'शाही तेज़ाब' (Aqua regia) में गल जाता है। यह बहुत सख्त होता है जल्दी घिसता नहीं, इस लिए इससे 'निब' की नोक बनाई जाती है। जो 'फ़ौण्टेन पेन' आज काल बिकती हैं उनकी निब की नोक पर 'इरीडियम' लगा रहता है इसी से इसका दाम ज्यादा होता है और बहुत दिनों तक घिस्ती नहीं बराबर काम देती रहती है। और सायंस के ऐसे नोकदार उपयंत्र इससे बनाए जाते हैं जिन पर ज्यादा रगड़ पड़ने से घिस जाने का डर रहता है।

Iron (आयरन)—लोह, लोहा, आहन। यह सब धातुओं में बहुत ही काम का धातु है। दुनियां के सभी मुलकों में यह थोड़ा या बहुत किसी न किसी सूरत में पाया जाता है। पर यह स्वयम् धातु की सूरत में नहीं मिलता बलके गिरे हुए तारों यानि उल्का में अलबत्ता धातु की हालत में मिलता है, या पुराने ज्वाला-मुखी पहाड़ों की चट्टानों में स्वयम् लोहे के कण मिलते हैं। जिन लोह-धातु में से लोहा ज्यादा निकलता है वह एक प्रकार का (Oxide of iron) लोहभस्म है इसको 'हेमेटाइट' (Hæmatite) भी कहते हैं। यह स्याही मायल, गेरूआ या लाल रंग का भी होता है। जो 'लोहाश्म' चिकना होता है वह कड़ा भी होता है। दूसरे क़िस्म का लोह-धातु-मूल 'लिनोनाइट' (Linonite) या 'यलो आक्साइड आफ़ आयरन' (Yellow oxide of iron) कहाता है। इसके लोहे को 'बोग आयरन' (Bog iron) कहते हैं। यही लाल या पीला गेरू है। तीसरे क़िस्म का लोहाश्म 'म्यागनेटिक' (Magnatic) चुम्बक पत्थर है। यह लोहे को खींच लेता है इसके पहाड़ के पहाड़ पड़े हैं। जिस चुम्बक पत्थर में मेगनीज़ और ज़स्ते का मेल भी रहता है उसे 'फ्रांक्लीनाइट' (Franklihite) कहते हैं। चौथा लोहाश्म 'स्पाथिक आयरन' (Spathic iron) कहाता है। लोहा ज्यादा तर दो रूप में पाया जाता है (१) तो मट्टी में मिला हुआ 'कार्बोनेट या क्ले आयरनस्टोन' (Carbonates or Clay ironstone) और (२) दग्धरूप (Oxide=आक्साइड) याने 'लोह भस्म'।

इन लोह-धातु-मूल को भट्टों में पत्थर के कोयले की आंच से गलाकर लोहा निकालते हैं। धातु-मूल से ढले हुए असंस्कृत लोहे को 'पिग आयरन' (Pig iron) या 'कास्ट आयरन' (Cast iron) यानि ढला लोहा या लोहकान्त कहते हैं, इसमें कारबन (कोयले) का मेल अवश्य रहता है बल्कि कभी कभी उसमें गंधक या फ़ास्फ़ोरस का अंश भी मिला रहता है जिसकी वजह से लोहा बहुत घटिया होजाता है। कार्बन के ही वजह से ढलुआं लोहा तुनुक-भंज होता है और मज़बूत नहीं होता। इसी को दूर करने के लिए लोहे को लाल करके घन से पीटते हैं, कारबन कुछ तो जल जाता है और कुछ छट कर निकल जाता है, तब लोहे में चिम्मड़पन आ जाता है और ऐसे लोहे की 'पट्टियों' को 'ब्लूम' (Bloom) कहते हैं। इन्हीं से छड़, डंडे, चद्दर वग़ैरा बनाई जाती हैं। गो यह मज़बूत होता है मगर काफ़ी तौर से इतना कड़ा नहीं होता कि उससे औज़ार बन सकें। इस काम के लिए स्पात या फ़ौलादी लोहा तयार करना पड़ता है। नर्म स्पात 'साफ्ट स्टील' (Soft Steel) को 'इङ्गाट आयरन' (Ingot iron) भी कहते हैं।

हिन्दुस्तान का पक्का लोहा या फ़ौलाद प्राचीन काल से तमाम दुनियां में मशहूर चला आता है। लेकिन खेद की बात है कि अब इसका कारोबार यहां से बिलकुल उड़ गया है। जितना लोहा हम लोग अब बरतते हैं सब बिदेश से आकर बिकता है। हिन्दुस्तान में अब भी लोहा भरा पड़ा है लेकिन इस कारोबार को करनेवाला कोई नहीं है। अलबत्ता अब ताता कम्पनी बनी है जो नए तरीक़ों से लोहा और लोहे की चीज़ें तयार करेगी। मोरभंज की रियासत, चांदपुर और रायपुर में यह कम्पनी काम करेगी। यह कम्पनी १९०७ में सवा दो लाख की पूंजी से क़ायम हुई है।

देहाती लोहार अब भी कहीं कहीं रियासतों में लोहा खुद निकालते हैं जैसे कि ओरछा, पन्ना, बिजावर वग़ैरा में।

लोहा निकालने में पत्थर का कोयला बहुत फुकता था इस लिए अब नए तर्ज़ से लोहा निकालने में ईंधन कम लगता है और माल ज्यादा तयार होता है।

बड़े पैमाने में 'ढलवां स्टील' तयार करने के लिए सर हेनरी बेसेमर साहब का तरीक़ा बहुत अच्छा है। इस तरक़ीब से बने लोहे को 'बेसेमर स्टील' (Bessemer Steel) कहते हैं। 'बेसेमर स्टील' बनाने की तरकीब यह है कि लोहे के बड़े बड़े पीपों में गला हुआ लोहा भरते हैं। इन पीपों पर ऐसी चीज़ लगी रहती है कि जो कड़ी आंच में भी नहीं गलती — एक खास क़िस्म का बालू होता है जो नहीं गलता यह 'ग्यानिस्टर' (Gannister) कहाता है। पीपे के अन्दर पेंदे में बड़े बड़े महीन महीन छेद होते हैं जिन में से ठंडी हवा ज़ोर के साथ अन्दर घुसती है। यह हवा गले हुए लोहे को छेदों में से बाहर नहीं बहने देती और लोहे में मिले हुए कार्बन के साथ मिलकर उन्हें आंच में जला देती है। जब सब कार्बन जल जाता है तब स्टील बनाने में जितना कार्बन होना चाहिये उतना कार्बन लोहे में अलग से मिलाया जाता है। लेकिन इसमें एक ऐब रह जाता था कि लोहा जल्द टूट जाता था इसलिये अब उस में 'स्पेगेलिसन' (Spiegeleisen) और 'फ़ेरो-मेंगनीज़' (Ferro-Manganese) मिलाकर यह ऐब दूर कर दिया जाता हैं।

दूसरी तरकीब एक और निकली है। इस तरक़ीब को 'सीमेन-मारटिन' (Siemen-Martin) या 'ओपन हार्थ प्रोसेस' (Open hearth process) कहते हैं। इसका भट्टा एक खास तरह का बनाया जाता है। स्टील कई क़िस्म का तयार होता है जैसे 'मेंगनीज़ स्टील', 'क्रोमस्टील' (इस में २ फ़ी सदी क्रोमियम और २ फ़ी सदी कार्बन रहता है), 'तुंगस्तीन स्टील' (यह निहायत सख्त होता है)।

लोहे के कई क़िस्म के भस्म या क्षार दवा के काम में लाये जाते हैं और रक्तवर्धक व पुष्टकारी होते हैं। दवा में लोहा बहुत इस्तेमाल होता है। अब सब लोहा युनाइटेड किंगडम (इंगलेंड), जरमनी व बेलजियम से ही हिन्दुस्तान में आता है। लोहा और लोहे की चीज़ें [मशीनें व रेल्वे मेटीरियल्ज़ सहित] जो आती हैं उसका ब्योरा :—

सन् १९०३-४ में १९,५८,०९,७७८ रू० का।
१९०४-५ में २०,३०,६६,३६६ ”

१९०५-६ में २३,०१,१०,५३२ रुपया का
१९०६-७ में २६ ८६,४९,६०५ "
१९०७-८ में २३,५३ ७७,००० "
१९०८-९ में २३,०७,९८,००० "
१९०९-१० में १९,३४,२६,००० "

लोहे के छड़, कील, कांटे, चद्दर वग़ैरा जो हर साल आती हैं उनका ब्योरा :—

१९०५-६ में	५,२१,०००	टन	मालियती	६,६४,३२,०००)
१९०६-७ में	५,२४,०००	"	"	७,५६,८२,०००)
१९०७-८ में	६,१७,०००	"	"	९,७५,१६,०००)
१९०८-९ में	६,११,०००	"	"	९,०४,३९,०००)
१९०९-१० में	६,०२,०००	"	"	८,८४,०९,०००)

इन में लोहे और स्टील दोनों क़िस्म की जीज़ें शामिल हैं। लोहे से स्टील की चीज़ें ज्यादा आती हैं। सन १९०८-९ में २६१६३५ टन लोहे की चीज़ें और ३४९३३५ टन स्टील की चीज़ें आंइ। इसी प्रकार सन १९०९-१० में २८२४८६ टन लोहे की चीज़ें और ३१९२११ स्टील की चीज़ें आईं।

सबसे ज्यादा लोहे के छड़ आते हैं, यह सन १९०९-१० में १२८८६१ टन आये जिसमें २६५९३ टनं लोहे और १०२२३८ टन स्टील के छड़ थे। इसके बाद 'गल्वनाइज्ड' चद्दरें १२४३७७ टनें आती हैं, 'टीन' की चद्दर १८२५६ टन आती हैं।

Iron Pyrites (आयरन पायराइट)—स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, सोनामाखी। यह खनिज पदार्थ हिन्दुस्तान में कई मुक़ामों में मिलता है और वैद्यक ओषधियों में बहुत बरता जाता है। यह दो तरह का होता है एक की डलियां ज़र्द रंग की होती हैं जिनमें सुनहली झलक रहती है इसे स्वर्णमाक्षिक कहते हैं और दूसरी क़िस्म रुपहली रंगत की होती है यह तारमाक्षिक कहाती है। वैद्यक में इनकी गिनती 'उपरस' में है।

Iron, Sulphates of (सलफ़ेट आफ़ आयरन)—कासीश, कसीस । जो कसीस सब्ज रंगत की होती है वह धातु काशीश कहलाती है और ज़र्द झलक वाली को पुष्प काशीश कहते हैं । हाल में बिलोचिस्तान से मिस्टर ह्यूज बुलर साहब ने एक खनिज पदार्थ भेजा था जो वहां लव या वचल के नाम से मशहूर हैं और रंगाई के काम में लाया जाता है वह भी एक प्रकार की कसीस है । कसीस दवा व रंगाई वग़ैरा के काम आती हैं । तेज़ाब में घुले हुए सोने को अलग करने के लिये 'सलफ़ेट आफ़ प्रोटोक्साइड आफ़ आयरन' (Sulphate of Protoxide of Iron) बड़े काम की चीज़ है, इसे 'ग्रीन कापरस, (Green Copperas) याने हीरा कसीस भी कहते हैं ।

Iron wood (आयरन उड)—निहायत सख्त लकड़ी जो कई क़िस्म के पेड़ों में से निकलती है उन्हें 'आयरन उड' कहते हैं ।

Isinglass (आसिनग्लास)—चंद क़िस्म की मछलियों के सांस-लेने-वाली नलियों का सरेस । इसे मछली का सरेस कह सकते हैं। यह उमदा क़िस्म की जीलेटीन गिनी जाती है । बिलायती मिठाईयों में या बीयर और वाइन शराब को साफ़ करने के लिए काम आती है । घटिया क़िस्म के 'आइसिनग्लास' से उमदा व स्वच्छ सरेस [Glue] व कलफ़ [Size] बनता है । रूस में यह बहुत बनाया जाता है । Gelatine देखो ।

Istle [इस्ल]—इसे 'मेक्सिकन ग्रास, [Mexican grass] भी कहते हैं। यह मेक्सिको [Mexico] देश का एक पेड़ जिसके रेशों से ब्रश बनता है ।

Ivory [आइवरी]—हाथीदांत । हाथी, गेंडे, दर्याई घोड़े वग़ैरा के सफ़ेद दांत की हड्डी को भी कहते हैं । हाथी का दांत हिन्दुस्तान, ज़ंजीबार वग़ैरा से बहुत चलान होता रहता है । सेंट्रल अफ़रिका में हर साल लगभग ४०,००० हाथी इसी दांत के लिए मारे जाते हैं । हिन्दुस्तान

का हाथीदांत हिन्दुस्तानही में ज्यादा खर्च होता है इसलिए बाहर कम जाता है। अफ़रिका का हाथीदांत ज्यादा चिकना और ठोस होता है इस लिए उसकी क़दर ज्यादा है। एशिया का हाथीदंत पहिले तो सफ़ेद रहता है पर दिन पाकर हवा लगने से ज़र्द पड़ जाता है। हाथीदंत की चूड़ियां, कंघी, चाकू के दस्ते, डिबियां इत्यादि तयार की जाती हैं और इसकी मोरछल व चटाइयां क़ीमती होती हैं। जो दांत १० सेर से कम वज़न का होता है उसे दन्ती 'स्क्रिवेलास' (Scrivellos) कहते हैं। हाथीदांत की चीज़ें हिन्दुस्तान में बम्हा, दिल्ली, मुरशिदाबाद, मैसूर, ट्रावंकार मुलमीन (बम्हा) में बहुत बनती हैं। हिन्दुस्तान से हाथी दंत लगभग १३ लाख रुपए का और हाथी दंत की चीज़ें २ या २½ लाख रू० की चलान होती हैं। बिदेश से भी हाथी दंत हिन्दुस्तान में बहुत आता है खास करके बम्बई में सन १९०८-९ में १५.१५ लाख रुपए का और सन १९०९-१० में २८.०७ लाख रुपए का आया। दिल्ली के कारीगर अफ़रीका के हाथीदांत बहुत ज्यादा पसंद करते और खरीदते हैं। हाथीदांत की चूड़ियां व चूड़े बहुत ज्यादा बनाये जाते हैं जिन्हें काठियावाड़ व कच्छ की स्त्रियां बहुत पहिनती हैं। बड़ी मछली के दांत भी हाथीदंत की जगह बहुत काम में लाए जाते हैं। अब 'सिलूलायड' (Celluloid) नाम के मसाले से नक़ली हाथीदांत बनाया जाने लगा है। हाथीदंत में जालदार या चौखूटी लकीरें रहती हैं। 'दर्याई घोड़े' (Hippopotamus ivory) के दंत ज्यादा सफ़ेद, ठस और मज़बूत होते हैं मगर इनके दंत पोले होने के कारण बड़ी चीज़ें नहीं तयार हो सकतीं। इनसे उतर कर 'वालरस' नामक जानवर का दंत होता है।

Ivory Black (आइवरी ब्लाक)—हाथीदंत के चूर याने बुरादे को बन्द घरिया में फूक देने से जो कोयला निकलता है उसे 'आईवरी ब्लाक' कहते हैं। Charcoal देखो।

Ivory, Vegetable (वेजेटेब्ल आइवरी)—यह 'मेगडलेना' (Magdelana) देश का एक क़िस्म के खजूर का पेड़ Phytelephus Macrocarpa है। इसके फल में से जो गरी निकलती है वह सुफ़ेद होती है और पकने वो सूखने पर बहुत कड़ी होजाती है। इसके फल को 'कोरोज़ो' (Corozo) कहते हैं। उससे बटन, छाते के मूठ या दस्ते, खिलौने इत्यादि बनकर हाथीदांत के नाम से बिकते हैं। लंडन और बरमिंघम के खराद के कारखानों में इसकी बहुत खपत है।

J.

Jacaranda (ज्याकरण्डा)—सीसम। ब्राज़ील देश मे सीसम का यही नाम है। यह लकड़ी बहुत सख्त व भारी होती है और इसमे से भीनी सुगन्ध आती है। यह लकड़ी सौथ अमेरिका से ज्यादा आती है।

Jaconet (ज्याकोंनट)—नैनसुख, नैनसुखपर की छीट। यह हिन्दुस्तान के मिलों में भी बहुत तयार होता है और बिलायत से भी बहुत मंगाया जाता है।

Jade (जेद)—संगे यशब, यश्म। इस की कई किस्में हैं।

Jadeite (जेडाइट)—शैल दिली, शैलदिली का पत्थर। यह भी एक क़िस्म का 'संग यशब' है।

Jadestone (जेद स्टोन)—संगे यशब, शैल दिली। यह कइ क़िस्म के पत्थर होते हैं, जिन की पहिचान बहुत मुश्किल है। एक क़िस्म इसकी 'जेड' (Jade) कहाती है जिसका तत्वांश 'सिलिकेट आफ़ काल्शियम' (Silicate of Calceum) और 'मेगनीशियम' (Magnesium) है और 'हार्नब्लेंड' (Hornblende) नामक खनिज पदार्थ की एक क़िस्म में से है और दूसरी जाति को 'जेडाइट' (Jadeite) याने संग सुलेमानी कहते हैं इस के तत्व में 'सिलिकेट आफ़ सोडा' (Silicate of Soda) और 'अल्यूमिना' (Alumina) रहता है। दोनों की ज़ाहरी पाहिचान कठिन है इस लिये दोनों एकही नाम से ज्यादा मशहूर हैं। यह पत्थर अपर-बर्म्हा की खानों से निकलता है। इस का बहुत व्यापार है और अंगूठी, चेन, कड़े, तलवार के कब्जे इत्यादि जड़ने में काम आता है। १९०६—७ में २,९९८ हंडरवेट मालियती ८,०२,२७०) का चलान हुआ था। यह संग न्यूज़िलेण्ड में भी पाया जाता है। सब्जी मायल यशब क़ीमती होता है। इस के कण्ठे की क़ीमत बाज़ वक्त १५,०००) तक की होती है और एक एक नग १५०) तक का होता है।

'जेडस्टोन' की चलान हिन्दुस्तान से लगभग १० या ११ लाख रुपये की होती है। यह संग हंग कांग में बहुत जाता है।

Jaggery (ज्यागरी)—खजूर का शकर, राब या गुड़। खजूर की फूलवाली शाख को कूट कर उस का अर्क़ निकाल लेते हैं और पका कर गुड़ या राब बनाते हैं।

Jamm (जाम)—जामुन। यह फल सियाह या बैजनी रंग का गुठलीदार बेर के बराबर होता है। इस का योरोप में मुरब्बा बनता है। इस के रस का सिरका उमदा होता है। यहां युरोप को भी चालान होता है।

Jamaica Pepper (जमैका पीपर)—Pimento देखो।

Japan Wax (जापान· व्याक्स)–जापानी मोम, अरकोल की मोम, काकड़ासिंगी की मोम। इस पेड़ का हिन्दुस्तानी नाम अरकोल, लखर, चोकलू, अड़खड़, टटरी है और इस की ढेंढ़ी को काकड़ासिंगी कहते हैं। इस की छोटी टहनियां पत्ती और फल को पानी में उबालने से सफ़ेद रंग की मोम निकल आती है जिस की गन्ध ख़राब होती है और स्वाद भी कड़ुआ होता है और गले को घरलेती है। इस का व्यापार खासा होता है और शहद-की-मक्खी-की-मोम से यह लसदार या चरबदार ज्यादा होती है।

Japanned wares (जापाण्ड वेयर्ज़)—ऐसे लकड़ी, धात या कूटे काग़ज़ की बनी चीज़ों और बरतन वग़ैरा को; जिनपर काले रंग की वारनिश देकर आंच में सुखा लेते हैं, 'जापाण्ड वयर्ज़' कहते हैं। यह काम जापान ही से शुरू हुआ है इसलिए इसका यह नाम है।

'अम्बर' या 'कोपल वारनिश' (Amber or Copal varnish) 'असफाल्टम' (Asphaltum) समभाग गरम करके मिलाते हैं फिर उसमें उसका आधा वज़न अलसी-का-तेल मिलाकर और घोटकर 'ब्राउन जापन' (Brown Japan) नामका वारनिश तयार करते हैं। टीन वग़ैरा पर जापानी रौग़न चढ़ाया जाता है, भूरा और काला रंग बहुत काम में लाया जाता है मगर इस क़िसिम का सभी रौगन 'बाउन जापान'

से तयार होता है। एक तह या कई तह चढ़ाकर रौग़न किया जाता है। रौग़न चढ़ाने के बाद भट्टे में (आग से अलग रखकर) १२ घंटे तक आंच दी जाता है फिर झांवे के चूर से रगड़ कर चमका लेते हैं और तब उस पर सुनहरे बेलबूटे बनाए जाते हैं, 'व्हाइट जापन' (White Japan) नाम का सफ़ेद रौग़न पानी रखने के टब व हौज़ के अंदर लगाते हैं।

जापानीज़ व चायनीज़ वेयर्ज़ हर साल लगभग पौने दो लाख रुपये के हिन्दुस्तान में आया करते हैं।

Jarrah [जर्रा]—जर्रा। यह लकड़ी बड़ी काम की होती है। इसका पेड़ वेस्टर्न आस्ट्रेलिया में होता है, इसकी दो क़िस्में हैं। इसके बल्ले रेल की सड़क के नीचे दीये जाते हैं और तार के खम्बे बनते हैं, क्योंकि इस लकड़ी में घुन वग़ैरा नहीं लगते। जहाज़ों के पेंदे में भी लगाई जाती है क्योंकि पानी में सड़ती नहीं। इस लकड़ी की क़दर अब बहुत की जाती है।

Jasmine [ज्यसमिन]—चमेली के फूल को कहते हैं। इसका इत्र निकाला जाता है। चमेली वग़ैरा के फुलेल या इत्र में सहजने का तेल भी मिलाया जाता है।

Jean [जीन]—जीन कपड़ा। यह 'ड्रिल' के सूत से बिना जाता है। यह कपड़ा जब साटन-बिनावट का साफ़ व चिकना बिना जाता है तब साटन-जीन [Satin Jean] कहलाता है।

Jesuit Bark [जेसुविट बार्क]—Cinchona देखो।

Jet [ज्यट]—जेट। एक क़िस्म का पत्थर का कोयला या काला पत्थर यह चमकदार खनिजपदार्थ मुक़ाम Whilly (Yorkshire) से बहुत निकलता है जहां इसकी मोटी तह पाई जाती है। यह हलका होता है और सहज में काटा जा सकता है और इस पर खूब अच्छी पालिश होती है। 'नक़ली जेट' सख्त रबड़ से और 'एबोनाइट' [Ebonite] या 'वलकनाइट' [Vulcanite] या 'कांच' से बनाते हैं।

Jewellary (ज़ुएलरी) - जवाहरात, जड़ाऊ जेवर, गहने, भूषण । क़ीमती धात सोना और चांदी, क़ीमती पत्थर हीरा, माणिक, पन्ना, नीलम, मोती, पुखराज, मूंगा, फ़िरोज़ा, याकूत, चूनरी, मनका, सब्ज़ा वग़ैरा के बने और जड़े ज़ेवरात को कहते हैं। योरोप में हीरा तराशी का कारोबार सबसे ज़्यादा अमसटर्डन (Amsterdan) में होता है। बरमिंघम में सस्ते ज़ेवरात ज़्यादा बनते हैं। सबसे उमदा और क़ीमती ज़ेवरात के लिए [Clerhenwell, London] मशहूर है। अब 'झूठे' या नक़ली जवाहिरात भी बहुत बनते हैं।

जवाहरात जो हर साल बाहर से आते हैं उनकी मालियत सन १९०७-८ में ६९,५७,००० रु०, सन १९०८-९ में ५१,६२,००० रु० और सन १९०९-१० में ८०,६०,००० रुपये की थी।

इसके अलावे सोने व चांदी की चीज़ें जैसे तशतारियां वग़ैरा भी इस देश में बहुत आती हैं। सन १९०८-९ में १८,२५,१४४) की सन १९०९-१० में २१,५९,०००) की चीज़ें आईं।

Jew's Mellow (ज्यूज़ मेलो)—जूट, पाट, पटसन। Jute देखो।

Job's Tears (जाब्ज़ टीयर्स)—गुरगुर, संक, जरगदी, झोंकी, कसी, केसई। यह एक क़िस्म की घास है इस की कई जातियां हैं। इस के दाने चमकदार और भूरे रंग के होते हैं इन से माला या देहाती जंगली लोगों के गहने गुथे जाते हैं। यह खाया भी जाता है और दवा में भी दिया जाता है। बहुत ज़माने से इस के बीजों की जपमाला योरोप और हिन्दुस्तान में बना करती है। मध्य प्रदेश, आसाम, शिकिम वग़ैरा के अरण्य वासी इसे खाते भी हैं। अवध वग़ैरा में कौड़ियों के साथ परोकर छितनियां, डालियां, दौरे वग़ैरा सजाए जाते हैं। छोटे सुन्दर दानों की क़दर इंगलैंड वग़ैरा में 'ट्रिमिंग', 'बीड' इत्यादि के लिए हो सकती है। स्पेन और पोरचूगल में यह घास लगाई गई हैं और उन से माला वग़ैरा बनाई जाती हैं। इसे 'काय' (Coix) भी कहते हैं। इस का व्यापार परदों के सजाने के लिए होता भी है और अगर क़ायदे के साथ व्यापार बढ़ाया जाय तो बढ़ भी सकता है।

Jonquil (जांक्विल)—ज़र्द नरगिस। यह एक क़िस्म का नरगिस है इस के तेल में उत्तम भीनी सुगंधि होती है। ईथर में इस के फूल डालने से इस के सुगंधी उतर आती है। इस का तेल ज़र्द होती है।

Jowarri (जोवारी)—बड़ी जुआर। हिन्दुस्तान में यह खाई जाती है, योरोप में मवेशियों के खिलाने के काम आती है और यहां से हर साल लाखों मन रवाना होती है। Millet देखो।

Juglans (जुग्लन) अख़रोट। Walunt देखो।

Jujube (जुजुबे)—बेर, कूल। यह दो क़िस्म के होते हैं:—

(१) जंगली जिस को झड़बेरी कहते हैं।

(२) जिस की क़लम लगाई जाती है वह पैवंदी बेर या प्योंदी बेर कहाता है।

इस पेड़ की छाल का कसाव चमड़ा बनाने के काम आता है। इस के फल खाए जाते हैं और दवा के काम भी आते हैं। लकड़ी सुर्ख़ रंग की सख़्त होती है और चोबी सामान बनने के काम आती है। इस के कोयले बहुत अच्छे होते हैं। इस पर टसर के कीड़े आसाम में पाले जाते हैं।

इस की तीसरी जाति फितनी बेर या उन्नाब कहाती है और पंजाब, काश्मीर, बिलोचिस्तान वग़ैरा में होती है। यही सूखने पर उन्नाब कहाता है और चीन या फ़ारस की खाड़ी से हिन्दुस्तान में बहुत आता है।

Juniper (जुनीपर)—फुल्ल। यह पेड़ कई क़िस्म का होता है। हिन्दुस्तान में सिर्फ़ दो क़िस्म के पेड़ पाए जाते हैं:—

(१) Juniperus Macropoda जिसे बिलोचिस्तान में धुरकी, झेलम में चलई, चनाब और सतलज (दोआब) में गुरगू, शूर, संयुक्त प्रांत में सुरगी, पदमक, पदाम, धूप, और नैपाली भाषा मे धुपरी चंदन शुकपा, धूपी कहते हैं।

(२) दूसरी जाति J. Recurva है जो पंजाब में फुळ; टछ, बेत्यार, बेटर, संयुक्त प्रान्त में फूल, भेंडर, बेटिर, गुग्गल, नेपाल में उगरू, ढूपी वगैरा कहता है।

इन के फल आसमानी रंग के होते हैं और 'जिन' (Gin) नामक शराब बनाने में इस्तेमाल होते हैं। इस की लकड़ी चोबी सामान बनाने में बहुत काम आती है जो हलकी और सुन्दर होती है। 'वर्जिन जुनिपर' (Virgin Juniper) नाम की लकड़ी क़ीमती होती है। इस लकड़ी की पेन्सिल व सिगार के बाक्स भी बनते हैं।

Junk (जंक)—पुराने रस्से व रस्सियों के टुकड़े।

Jute (जूट)—पटसन, षाट या जूट। यह केवल हिन्दुस्तान में ही होता है। इस के रेशों का ही व्यापार होता है। इस की कई जातियां हैं जैसे:—

(१) Corchorus Capsularia—नरचा, घीनल्ता पात।

(२) C. Olitorins—बनपात, देशीपात, तोशा।

(३) C. Capswlaris—नालित, नरिच, साग।

इन की काश्त लाखों एकड़ में होती हैं और पैदावार भी १२ या १३ करोड़ रुपए से कम नहीं होती। पेड़ को काट कर पानी में सड़ाते हैं और रेशे निकाल लेते हैं जो सुखा कर गट्ठे के गट्ठे कलकत्ते रवाने कर दिए जाते।

उत्तम रेशों का रंग ज़र्दी मायल भूरा और रेशमी चमक का होता है। इन रेशों से बोरे और गांठ बांधने के टाट वग़ैरा बनाए बनाए जाते हैं। हेसियन (Hessians) बेग, तिरपाल, फ़रसी टाट, दरिया वग़ैरा बनाने के अलावा यह साफ़ कर के रेशमी कपड़ों में मेल भी दिया जाता है। इन सब कामों की मशीने होती हैं।

सब से उत्तम रेशे 'उतरिया' कहाते हैं — यह लाम्बे, मज़बूत और चमकदार होते हैं। दूसरी क़िस्म के 'देशवाल' कहाते हैं यह बहुत ही मुलायम रेशे होते हैं। तीसरे दर्जे वाले रेशे 'देशी' कहाते हैं

इस से बोरे तयार किए जाते हैं और चौथे दरजे के रेशे 'देवरा' या 'दौरा' कहाते हैं जो रस्से बनाने के काम आते हैं। इनके अलावा 'नारायणगंजी' और 'सिराजगंजी' जूट भी अच्छे होते हैं जो ज़िला पबना व मैमनसिंग से आते हैं।

इस के व्यापार का हाल नीचे लिखे अंकों से मालूम हो जायगा।

रकबा काश्त	पैदावार गांठ (५-मनी)	हिन्दुस्तान में खपत गांठ (पचमनी)	तायदाद रवानगी गांठ (५-मँनी)
१९०५—३१२८०००	८०८८०००	४०४००००	४२०२०००
१९०६—३४८३०००	९१२७०००	३४३२०००	४५८०९००
१९०७—३९७४०००	९८१८०००	३७६३०००	४३००५००
१९०८—२८५७०००	६३९९०००	३६९६२००	४६५५६००
१९०९—२७७६०००	७२०७०००	४३९२९००	४०४६०००

हिन्दुस्तान में जूट के कारखानों और लूम्ज़ वग़ैरा का ब्योराः—

साल	तायदाद कारखाना	तायताद तकले	तायदाद करघे
१९०५	३८	४५३१६८	२११८३
१९०६	४३	६२०५०४	२५२८४
१९०७	५१	५६२२७४	२७२४४
१९०८	५६	६०७३५८	२९५२५
१९०९	५९	६६६३४८	३२४५१

इन कारखानों के बने माल देश में सर्फ़ होने के अलावा बाहर बहुत ज्यादा जाते हैं जिन का ब्योरा यह हैः—

सन्	बोरे	कपड़े
१९०५—६	६,०७,८४,००० रु०	६,३०,५०,००० रु०
१९०६—७	७,३४,७२,००० "	८,२५,८७,००० "
१९०७—८	८,४७,५१,००० "	९,६९,२९,००० "
१९०८—९	७,७६,६५,००० "	७,८९,०२,००० "
१९०९—१०	८,६०,७५,००० "	८,४३,०८,००० "

K.

Kainite (कैनाइट)—एक क़िस्म का खनिज पदार्थ जो जर्मनी देश के मुक़ाम 'स्ट्रासबर्ग' (Strassburg) में पाया जाता है। यह खाद के काम में बहुत लाया जाता है।

Kali (कली)—ऐसा 'टारटरेट आफ़ पोटाश' (Tartarate of Potash) जो पानी में घुल जाय।

Kamala (कमला)—कमीला। कमीला या रोरि या सिंदुरी या तुंग नाम का पेड़ काश्मीर से पूरब की तरफ़ होता है। सिंघभूम और पुरी की तरफ़ बहुत पाया जाता है और संयुक्त प्रांत में साल के पेड़ के जंगलों में आपही होता है। इसके फल की ढोंड़ी में से बुकनी निकलती है जो रेशम रंगने के काम में हिन्दुस्तान मे बहुत लाई जाती है और यह दस्तावर दवा भी है।

हूपड़ साहब ने इससे रेशम रंगने का एक नुसखा दिया है जिसे बेलगांव के रंगरेज़ बरतते हैं।

नुसखा—१ सेर रेशम को आध सेर सज्जी और पानी में डाल कर कुछ देर उबालते हैं फिर उसी पानी में २० तोला कमीला, तिल का तेल २½ तोला, फ़िटकरी १ पाव और साफ़ सज्जी ½ सेर और मिला कर पाव घंटा पानी उबालते हैं। तब उसमें रेशम फिर डाल कर पाव घंटा उबालने से रेशम पर उमदा नारंगी रंग या गहरा ज़र्द रंग चढ जाता है।

मध्य प्रदेश में टसर इस तरह रंगते हैं कि कमीलां की बुकनी को हड़ की राख के साथ मिलाकर पानी में घोल देते हैं जो कुछ देर पड़ा रहने पर मसाला नीचे बैठ जाता है। पानी को निथारं लेते हैं और उसमें लोध की छाल महीन पीस कर घोल देते हैं। इसमें ६ घंटे तक टसर भिगाने के बाद निकालकर सुखाते हैं और फिर

उसमें भिगाते और सुखाते हैं। इस तरह कई बेर करने से जितना हलका या गहरा रंग चढ़ाना होता है चढ़ा लेते हैं।

Kaolin (केओलिन)—चीन की मट्टी, चीनी मट्टी। इसे 'चाइना क्ले' (China clay) भी कहते हैं। चीन में कौलिंग नामक पहाड़ से यह मिट्टी पहिले पहिल निकली थी इसी लिए इसका नाम भी 'कौलिन' हो गया। इस से मट्टी के बरतन, खिलौने वग़ैरा बनाए जाते हैं जो 'चीन के' बरतन या खिलौने कहलाते हैं। अब यह मट्टी कई देशों में पाई जाती है। महाराजा कासिमबाज़ार की रियासत (बंगाल) में और और भी कई जगह पाई गई है।

Kanoff (केनॉफ़)—Deccan Hemp देखो।

Kapok (क्यपॉक)—सफ़ेद सेमल, कतान, सेम्यूला। यह रूई गद्दे वग़ैरा भरने के काम में लाई जाती है। अब सुना गया है कि इससे सूत कातने की तरकीब भी निकाली गई है।

Kauri (कौड़ी)—कौड़िया राल। न्युज़िलेंड में एक क़िस्म की चीढ़ की जाति का पेड़ होता है, इसकी लकड़ी सफ़ेद और चिकनी और मुलायम होती है। इसमें से राल निकलती है जिससे बारनिश बहुत बनाई जाता है। इसका व्यापार ख़ासा होता है।

Kekume oil (केकुम आयल)—जंगली अख़रोट का तेल। यह पेड़ हिन्दुस्तान में भी पाया जाता है मगर मालय द्वीप में खूब पनपता है। इसके फल में आधा तेल रहता है जो पानी में उबाल कर निकाला जाता है और दस्तावर दवा है।

Kelp (क्यल्प)—सद्री सेवार की खार। इसी से 'आयोडिन' (Iodine) और 'ब्रोमाइन' (Bromine) तयार होता है। इसमें से 'कार्बोनेट या सल्फ़ेट आफ़ सोडा' (Carbonate or Sulphate of Soda) वग़ैरा भी निकाला जाता है। इसी से 'आयडोफ़ार्म' (Iodoform) भी तयार होता है।

Kermes (केर्मेस)—किरमिज़। 'किरमज़ी' रंग इसी का होता है। लाह के कीड़े की तरह यह भी एक कीड़ा होता है जिसके अंडे वग़ैरा

को पेड़ों पर से छील छील कर रंगने के काम में लाते हैं। इसका व्यापार पहिले ज्यादा होता था पर अब कम होगया है जब से कि 'अनीलीन कलर' चला है।

इसी नाम का एक लाल रंग का खनिज पदार्थ मध्य योरोप (Central Europe) में मिलता है और 'केर्मीसाइट' (Kermesite) कहलाता है।

Kermesite (केर्मेसाइट)—Kermes देखो।

Kerosine (केरोसिन)—केरोसिन तेल, मट्टी का तेल। यह तेल खान में से निकलता है। पेट्रोलियम, प्याराफ़िन, मिनरल आयल और शेल आयल को भी 'केरोसिन' कहते हैं। अमेरिका, रशिया, ग्रेटबृटन और बर्म्हा से निकाला जाता है। यह तेल झट बल उठता है, इससे होशियार रहना चाहिये। अब इसका रवाज रौशनी करने के काम में बहुत होने लगा है, अब घर घर में यही बाला जाता है। यह 'क्रूड प्रेट्रोलियम' से कशीद कर के निकाला जाता है। हिन्दुस्तान में यह तेल बर्म्हा से ज्यादा आता है याने आधा माल बर्म्हा से आता है और आधा अन्य देशों से। हिन्दुस्तान में जो केरोसीन आता है उस की मालियत तीन साल की दी जाती हैं।

सन्	विदेशों से	बर्म्हा से	कुल
१९०७-८	२५२१४००० रुपया	२३०५६०००)	= ४८२७०००० रुपया
१९०८-९	३३३२५००० "	२२५१२०००)	= ५५८३७००० "
१९०९-१०	२५१११००० "	२५२६९०००)	= ५०३८०००० "

Kid Skins (किड स्किन्ज)—भेड़ के बच्चे के चमड़े। खास कर दस्ताने बनाने के काम आते हैं।

Kidderminster (किडरमिस्टर)—एक क़िस्म की दरी या क़ालीन।

Kimmel, Kummel (किमल, कुमल)—एक क़िस्म की शराब।

Kimmeridge clay (किमेरिज क्ले)—एक क़िस्म की तेलिया मट्टी जो 'परबेक टापू' (Isle of Purbeck) में पाई जाती है और खूब जलती है।

King wood (किंग उड)—एक क़िस्म की शीशम की जाति की लकड़ी जो ब्राज़ील देश से आती है। इसे 'वायोलेट उड' (Violet wood) भी कहते हैं क्योंकि इसमें नीली धारियां होती हैं। यह इतनी सुन्दर लकड़ी होती है कि इसकी नक़ल तक रौग़नसाज़ी करके बनाते हैं।

नुसखा—१ पाव 'फ्रेंच बेरीज़' (French Berries) २$\frac{1}{2}$ सेर पानी में उबालकर उसका ज़र्द रंग उतार लेते हैं। इस गर्म गर्म मसाले से लकड़ी पर तीन या चार तह का रौग़न चढ़ाते हैं बाद में स्याह धारियां बना देते हैं। अगर ज्यादा चटक रंग लाना होता है तब 'लाग उड' का गाढ़ा काढ़ा तयार करके एक लेप इसका भी देकर तब स्याह धारी बनाते हैं।

King's Yellow (किंग्ज़ यलो)—हरताल। Orpiment देखो।

Kino gum (किनो गम)—हीरादोखी, दम्मुल-अखवायन। यह एक क़िस्म की गोंद बिजैसाल या पियासाल पेड़ से निकलती है। यह पेड़ सेंटरल इंडिया, सौथ इंडिया और सिलोन में और बिहार व कुमाऊं के उत्तर पहाड़ों में होता है और अफ़रिका व आस्टेरीलिया में भी पाया जाता है। यह गोंद गंदुमी या लाल रंग की होती है। पेड़ में खड़ा पछना लगा देते हैं और पेड़ के नीचे भाग में बांस के चोंगे लगा देते हैं जिसमें पेड़ का रस बह कर जमा होता है। २४ घंटे बाद जब रस निकलना बंद हो जाता है तब उसमें से रस निकाल कर कड़ाह में उबालते हैं। जो मैल उफन कर ऊपर तैर आती है उसे काछ लेते हैं। जब गाढ़ी हो जाती है तब निकालकर धूप में सुखा लेते हैं। इसका व्यापार खासा होता है। यह गोंद पानी में कम मगर अलकोहल में लगभग बिलकुल घुल जाती है। ईथर में नहीं घुलती। इस पेड़ की लकड़ी बहुत अच्छी होती है। इस पेड़ में से चमड़ा पकाने लायक़ कसाव भी निकाला जा सकता है।

Kitt fox [किट फ़ाक्स]—एक क़िस्म की छोटी लोमड़ी जो अमेरिका में पाइ जाती है। इसकी खाल काम आती है।

Kittool [किटुल]—कितुल, मेर या मारमरदी। पेड़ के पत्तों के रेशे इसे 'इंडियन गट' [Indian gut] भी कहते हैं। Caryota Urens= मारी, भेरवा, भीरलीमर्द, मारमर्द नाम का खजूर का सा पेड़ शिकिम, हिमालय, आसाम, सिलोन, सिंगापुर या अन्य उष्णभाग हिन्दुस्तान होता है और 'इंडियन सागो पाम्' (Indian sago palm) या 'बास्टर्ड सागो' (Bastard sago) भी कहाता है। इसके रेशों से रस्से, ब्रूश वग़ैरा बनते हैं हिन्दुस्तान में भी इसके रेशे ब्रूश में सुअर के बालों के साथ मिलाकर लगाए जाते हैं। सिलोन में इस पेड़ के रेशे को किट्टल (Kittul fibre) और ओड़ीसा के पेड़ के रेशों को सलोपा (Salopa) कहते हैं।

Kokra wood (कोकड़ा उड)—एक क़िस्म की लकड़ी है, हिन्दुस्तान में बहुत होती है इसे 'कोकस' (Cocus wood) भी कहते हैं। खराद के काम आती है और योरोप में बाजा बनाने के काम में लाई जाती है।

Kokum butter (कोकम् बटर)—कोकम का तेल, मंगोस्तीन का तेल। कोकम, रतम्बी, भिरंड या करम्बी नाम का एक पेड़ होता है जो कोकन, कनारा वग़ैरा के जंगल में होता है। इसके बीज का तेल गाढ़ा होता है इसी को कोकम का घी कहते हैं। यह घी में मिलाया जाता है और मरहम बनाने के काम में भी लाया जाता है। इसका फल जंगली मंगोस्तीन कहलाता है। गोआ (Goa) नगर में अब भी इसे 'बृन्दाओ' (Brindao), 'बृण्डोनिया टेलो ट्री' (Brindonia Tallow Tree) कहते हैं।

Kola nut (कोला नट)—यह अफ़्रिका के एक पेड़ का फल या बीज है। वहां वाले इसे प्रायः चबाते हैं। इसको मुंह में रखकर चूसने से भूख या प्यास का कष्ट कम हो जाता है और चाय की तरह उत्तेजक होता है। यह दवा में काम आता है खास करके 'लिंवर' याने जिगर की बिमारी में।

Kollinski (कोलिंस्की)—साइबीरिया देशका समूर जानवर। इसके खाल

का बहुत व्यापार होता है जिससे उमदा पोस्तीन बनाई जाती है और पोंछ से तस्वीर रंगने के ब्रुश या क़लम बनते हैं ।

Koumiss (कौमिस)—घोड़ी के दूध की दही। घोड़ी के दूध में खमीर लाने पर यह चीज़ तयार होती है ।

Kummel (कुम्मल)—विलायती ज़ीरा। Karaway, European देखो।

Kuskus (कस्कस्)—खस। खस घास से खस का इत्र बनता है और इस की टट्टी व परदे गरमी के दिनों में हिन्दुस्तान में बहुत इस्तेमाल होते हैं। यह घास गरमियों में बहुत बिकती है ।

L.

Lac (लाह)—लाह, लाख, लाक्ष। यह कई क़िस्म और कई जाति के बहुत छोटे कीट होते हैं जो पलाश, कुसुम, पीपल, बेर, रहर इत्यादि पेड़ों पर पलते हैं और उन्हीं पर अपने लोआब से घर बना कर रहते हैं और वहीं अंडों की थक की थक शाखों पर देते हैं। डालियों पर खुरंड की तरह यह सब जमे रहते हैं, यही खाम लाख कहलाती है। यह कीड़े पाले भी जाते हैं और इस कारोबार में अच्छा मुनाफ़ा होता है। डालियों पर से जब यह लाख खुरच ली जाती है तब दाना लाख कहलाती है। पानी के हौज़ में पैरों से कुचल कर 'खाम लाख' अलग की जाती है और यह पानी लाखी रंग से रंगीन हो जाता है जिस से लाखी रंग या 'किर्मई रंग' निकाला जाता है। अब इस रंग की क़दर इतनी नहीं रह गई जितनी कि पहिले की जाती थी और रेशम या चमड़ा रंगने के काम आती थी। उत्तम लाख में ५० फ़ी सदी रंग और २५ फ़ी सदी उत्तम लाह रहती है। लाख दाना को कपड़े के लम्बे थैले में भर कर आंच पर टिघलाते हैं और शुद्ध लाह जो छन कर बाहर निकल आती है उसे फिर तपा तपा कर हाथ पैर और मुंह से फैला कर उसकी पतली चद्दर बना लेते हैं जिसे 'चपड़ा लाख' (Shellac) कहते हैं। लाख केवल हिन्दुस्तान ही में होती है दुनिया के और कहीं नहीं होती।

इस के कारखाने बंगाल और युक्त प्रदेश में ज्यादा हैं जिनकी तफ़सील यह है—

सन्	बंगाल	युक्तप्रान्त
१९०४	९२	३६
१९०८	३२	५०
१९०९	५६	११२

सूबा बंगाल में लाख के कारख़ाने ज्यादातर रांची, मानभूम, बांकुड़ा और बीरभूम में हैं और संयुक्त प्रान्त में सिर्फ़ मिरज़ापुर में इसके कारख़ाने

हैं, काशीपुर की फ़ेक्टरी सबसे बड़ी है। इन सब कारखानों में कल से काम सिर्फ़ ३ फ़ेक्टरियों में होता है बाकी में हाथ से। खाम लाह कामरूप, खासिय और गारो पहाड़ से और मध्यप्रदेश में जबलपुर, दमोह, नागपुर, रायपुर, बिलासपुर, सम्बलपुर, चांदा और मण्डला से आती है।

'लाखी रंग' पहिले रंगने के काम में बहुत आता था मगर बुकनी के रंग के आगे इसका रंग फीका पड़ गया है। हालांकि वह खूबसूरती और पक्कापन अब इस नए रंग में नहीं आता। लाह अब लाह वारनिश, मोहर की बत्ती बनाने और बिजली की मशीनों में बहुत काम आती है इस लिए इसकी मांग ज्यादा रहती है। इसका व्यापार नीचे लिखे अंकों से प्रगट होगा कि किस क़दर इसकी चलान हर साल होती रहती है। सन् १९०८-९ तक तो लगभग ८ लाख रुपये का 'लाही रंग' चलान हुआ था फिर इसकी चलान कम होते होते १८७८ में लगभग २ लाख रु० से कम रहगई और फिर १८८८-९ में ८ हज़ार रु० की होगई और इसके बाद एक दम बंद। अब रही लाह उसका व्योरा यह है।

सन्	१८६८-९	में.	११,६५,७३९ रु०
,,	११०२-३	में.	१,५७,३४,८७२ ,,
,,	१९०६-७	में.	२,८९,७५.५५२ ,,
,,	१९०७-८	में.	४,०८,३१ ००० ,,
,,	१९०९-१०	में.	२,७७,१७,००० ,,

इसमें शक नहीं कि लगभग ३ करोड़ रुपये की लाख हर साल विदेशों में जाकर बिकती है। लाह की क़िस्म जो जाती हैं उनके बाबत तीन साल का व्योरा काफ़ी होगा।

	शेललाक	बटन लाख	दाना लाख
१९०७-८	३,३२,३८,१६७ रु०	४६,८०,४८९ रु०	२०,५९,७०४ रु०
१९०८-९	२,४६,५१,३०७ ,,	२३,३३,००५ ,,	५,८८,६१२ ,,
१९०९-१०	२,४२,४२,६४० ,,	२२५,४०,२५९ ,,	,३८,३१९ ,,

Lace (लेस)—लैस। तरह तरह की सूती, रेशमी, सोनहरी या रूपहरी तारों की जालीदार बनी हुई या फ़ीते को लैस कहते हैं। 'लैस' तीन तरह की होती है जिंसे अंग्रेज़ी भाषा में 'पॉयंट लेस' (Point lace), 'पिलो लेस' (Pillow lace) और 'मशीन लेस' (Machine lace) कहते हैं। पहिली दो क़िस्म हाथ से तयार की जाती हैं और तीसरी मशीन से। सूई या सलाई द्वारा जो लेस बनता है 'पॉयंट लेस' (Point lace) कहते हैं और गद्दी पर पिन खोंस और उन पर सूत गुथ कर जब लैस तयार की जाती है वही 'पिलो लेस' (Pillow lace) है। लैस तयार करना बड़े उलझन दीदारेज़ी, शुमार और सुबुक हाथों का काम है। हाथ से लैस तयार करने का कारोबार फ्रांस और बेलजियम वग़ैरा में बहुत होता है और कई तरह व तर्ज़ की लैस बनती है। लैस बनाने की जो मशीन चली है उस के बनाने वाले की क्या तारीफ़ की जाय, पेचीदा मशीनों में इसकी गिन्ती है और मेकानिकल (कला संबंधी) के शिखर का मानों एक नमूना है।

नुसखे:—(१) लैस धोना या साफ़ करना—पहिले लैस पर हलके हाथ से लोहा कर दे फिर लपेट कर या तह लगा कर एक साफ़ लट्ठे के थैली में भर कर सी लेवे और एक रात दिन ज़ीतून के तेल में तर रक्खे। दूसरे दिन साबुन के पानी में पाव घंटा तक उबालें और कोसे पानी में खूब धो कर स्टार्च याने मांड़ी में ग़ोता देकर थैली में से लैस निकाल ले और किसी गोल चीज़ पर लपेट कर सुखा ले।

(२) लैस पर कलफ़ देना—एक साफ़ बोतल पर लैस को बराबर कर के लपेटे फिर नर्म साबुन के मिले कोसे पानी से पुचारा देकर उस की गर्द या मैल साफ़ कर ले (सोडा से कदापि न धोए) जब साफ़ हो जाय तब सूखने के पहिले हलके गोंद के पानी में ग़ोता दे और धूप में सुखावे। और लैस को निखारना हो तो बहुत ही हलके क्लोराइड आफ़ लाइम के घोल में निखार ले। स्टार्च की कलफ़ देकर हवा में सुखा ले।

Lacquer (ल्याकर)—लाखी काम, लाखी रंग रौग़न का काम। लाख को अलकोहल में घुला कर और संदरूस, खूनखराबा या दूसरे रंग के साथ मिला कर चीज़ों पर वारनिश या रौग़न करने को लाखी रंग चढ़ाना (Lacqering) कहते हैं। सुनहरी या रुपहली काम पर हलकी परत लाख की चढ़ा देने से उस पर मैला दाग़ जल्दी नहीं पड़ता। हिन्दुस्तान में लाखी रौग़न कई ढंग के काम के लिए चढ़ाया जाता है और उन के जुदे जुदे नाम हैं, जैसे सादा रंग, अबरी का काम, आतिशी, नकशी वग़ैरा।

जापान का 'लैकर वेयर' (Jappan lacquer ware) दूसरे तरीक़े से बनता है। जापान में 'उरशीनोकी' (Rhus vernicipera) नाम का पेड़ होता है उसी का रस या राल का रौग़न लकड़ी पर चढ़ाते हैं। जापान का लैकर का काम मशहूर है। यह रौग़न ज्यादा तर टोकियो के उत्तर भागों में तयार किया जाता है और हर साल लगभग ३०००० से ३५००० टब तक तयार होता है (एक टब ४ गेलन का होता है) और ओसाका की मंडी में बिकने बहुत आता है।

नुसखे—[१] पीतल पर चढ़ाने का लाखी रंग—लाख-दाना, खूनखराबा, लटकन का फूल और गम्बोज, प्रत्येक चार चार औंस, केसर १ औंस, स्पिरिट (शराब) ६$\frac{1}{8}$ सेर।

[क] १ रतल हलदी, २ औंस लटकन का फूल, १२ औंस लाख, १२ औंस काकड़ासिंगी की गोंद (Juniper gum), स्पिरिट १२ औंस।

[ख] ३ औंस लाख दाना, २ ड्राम खूनखराबा, १ औंस हलदी पिसी हुई लेकर १० छिटांक रेक्टीफ़ाइड स्पिरिट में १४ दिन तक घुलने दे। हर रोज़ बोतल हिलाकर घुला दिया करे जब सब मिल जुल जाय तब साफ़ी से छान कर काम में लावे।

[२] ब्रोंज़ पर का लाखी रौग़न—६ छिटांक चपड़ा लाख ४ छिटांक संद्रूस को ३$\frac{3}{8}$ सेर अलकोहल में घुलाकर खूनखराबा और हलदी मिलाकर गहरा या हलका जैसा रंग लाना हो बना ले।

[३] ताम्बे पर का लाखी रंग—एक बड़े बोतल में ५०० ग्रेन मिथीलेटेड स्पिरिट और १०० ग्रेन कुटी हुई गोंद रक्खे, दूसरे बोतल में १०० ग्रेन 'बिटूमेन' (Bitumen) और ५०० ग्रेन 'बेनज़ीन' (Benzine) डालकर घुलावे । २ या ३ दिन में जब सब घुल जाय तब दोनों मसालों को बराबर बराबर मिलाले और पिसा कोयला मिलाकर गाढ़ा कर ले । जब पतला करना हो तो अलकोहल और बेनज़ीन सम्भाग का घोल डाल कर पतला करले ।

[४] सुनहरा लाखी रंग (Gold lacquers)—ज़र्द लाख, गम्बोज खूनखराबा और लटकन का फूल हरेक १२½ औंस और ज़ाफ़रान् ३¼ औंस । हरेक मसाले को अलग अलग अलकोहल में घुलावे। अलकोहल ५ पैंट होनी चाहिये । केसर और खूनखराबा अलग उतनेंही अलकोहल में भिगावे । फिर उन्हें मिलावे जैसा रंग तयार करना हो ।

[क] उमदा सुनहरा 'लैकर'—१ पाइंट स्पिरिट में ३ औंस उमदा लाख (Shellac), ½ औंस हलदी, २ ड्राम लटकन का फूल (Annatto) और २ ड्राम ज़ाफ़रान । ऊंट के बाल के ब्रश से लगाना चाहिये ।

[ख] १ गेलन मेथिलेटेड स्पिरीट में १० औंस लाख दाना और ½ औंस लाल चंदन कूट पीस कर घुलावे और छान ले । ..

[ग] ३ भाग मुसब्बर (Aloes), १ भाग पिसी हलदी, ८६ भाग ज़र्द वारनिश ।

[५] ज़र्द लाखी रंग—१ गेलन स्पिरिट में ५ औंस चपड़ा लाख, ४ औंस संद्रस, १ औंस एलमी गोंद (Gum elemi) मिलाकर धीमी आंच दिन भर दे और छान ले ।

(क) ½ गेलन स्पिरिट आफ़ वाइन में १ औंस चपड़ा लाख घुला लो फिर उसमें ¼ औंस खूनखराबा मिलाने से नारंगी झलक का रंग बनेगा । एक हफ़्ते तक पड़ा रखने बाद निथरा मसाला धीरे से अलग करके छान लो और ऊंट के बाल के ब्रश से लगाओ ।

[६] सब्ज़ लाखी रंग - ज़र्द लाखी रंग में ६ औंस हल्दी और १ औंस गम्बोज मिलावे ।

[क] पहिले १ औंस रेवनचीनी और ६ औंस हल्दी मिलाकर तब इसे किसी ज़र्द लैकर के नुसखे में मिलावे। सब्ज़ रंग तयार हो जायगा।

[७] रांग पर का लाखी रंग—२ औंस लाख दाना, २ ड्राम खूनखराबा, १ औंस हल्दी की बुकनी और १ पैंट स्पिरिट में १४ दिन तक घुला रक्खे और रोज़ हिला दिया करे जब सब घुल जाय तब मल मल के छान ले।

[८] टीन या रांग पर की 'लैकर'—१ पाइंट स्पिरिट आफ़ वाइन में १ औंस हलदी की बुकनी, २ ड्राम खूनखरावा और १ औंस कोपल वारनिश डालकर लैकर तयार करले।

(९) सुर्ख़ लैकर—२ क्वार्ट स्पिरिट आफ़ वाइन मे २ औंस खून-ख़राबा, ४ औंस लटकन का फूल और २ औंस चपड़ा लाख मिलाकर और छान कर काम में लावे।

(१०) चांदी की चीज़ पर लैकर चढ़ाना—चांदी की चीज़ पर पहिले अंडे की सफ़ेदी लगा दे जब यह सूख जाय तब उस पर जिस रंग का लैकरिंग रंग करना हो करले।

[११] पीतल का सा रंग चढ़ाना—२ क्वार्ट पानी में १ औंस 'प्रोटोक्लोराइड आफ़ टिन' (Protochloride of tin) और १ औंस सलफ़ेट आफ़ कापर मट्टी के बरतन में मिला ले। इसमें गोंद देकर जितना गहरा रंग चढ़ाना हो चढ़ा ले।

(नोट—जिस पर लैकर करना हो उस पर से चिकनाहट, मैल वग़ैरा खूब साफ़ करले। तब ऊंट के बाल के ब्रश से जिसमें किसी धात का बन्द वग़ैरा न लगा हो लैकर लगावे। जब तक सूख न जाय दोबारा ब्रश उस जगह न फेरे। सब जगह बराबर लैकरिंग हो जाने पर सुखाले और तपती हुई भट्टी में २ या ३ मिनिट तक के लिए रखदे।

Lactose (ल्यक्टोज़)—दूध का शकर।

Lamb Skin (ल्याम्ब स्किन्)—भेड़ या बकरी के बच्चों की पोस्तीन। यह दस्ताने बनाने के काम में आती है।

Lametta (लमेटा)—तार या वरक। सुनहरी, रूपहली या ताम्बे की तार या उनके वरक। यह इटली भाषा का शब्द है।

Lamp black (ल्याम्प ब्लाक)—काजल, चिराग़ का काजल। तेल वग़ैरा का धूआं जमाकर काजल तयार किया जाता है। रोशनाई, छापे की रोशनाई, वाटर-कलर (Water colour) या आयल-पेण्टिंग (Oil Painting) के स्याह रंग बनाने के काम आता है।

Lanoline (लेनोलीन)—ऊन की चरबी। ऊन धोने पर ऊन में की चिकनाहट या एक क़िस्मि की चर्बी जो उसमें से निकलती है उसे 'लेनोलीन' कहते हैं। इससे मरहम या सस्ते साबून तयार किए जाते हैं। इसको 'ऊन की चरबी' या 'ऊनी चरबी' कहें तो क्या बेजा है।

Lapis lazuli (ल्यापिस लेज़ूली)—लाजवर्द। यह आसमानी रंग का मट्ठल चमक का नग है। इसकी बुकनी आसमानी रंग के रंग रौग़न बनाने के काम आती है जिसे 'आल्ट्रामेराइन कलर' [Altramarine colour] भी कहते हैं। उत्तम नग बोखारा में मिलता है। चूंकि इसकी बुकनी से रंग तयार करने में ज्यादा लागत आती है इसलिए अब बनावटी 'अल्ट्रामेराइन' [Ultramarine] याने आसमानी रंग बनाया जाता है।

Lard [लार्ड]—सूअर की चरबी। अमेरिका से यह बहुत आती है। इस चरबी में थोड़ा नमक मिला दिया जाता है जिससे वह सड़े नहीं। इसमें से 'स्टीयरीन' [Stearine] और ओलीन' [Olein] भी निकालने का तरीक़ा निकाला गया है। स्टीयरीन' [चरबी का सत] मोमबत्ति बनाने के काम आता है और 'ओलीन' [चरबी का तेल] मशीनें वग़ैरा में तेल देने के लिए इस्तेमाल होता है। इसे 'लार्ड आयल' [Lard Oil] भी कहते हैं।

सूअर के मांस और चमड़े के दर्मियान में जो चरबी रहती है वही बहुत उमदा और ज्यादा क़ीमती होती है, इसे 'लीफ़ लार्ड' [Leaf Lard] कहते हैं।

'लार्ड' रूस, हंगेरी और सर्विया देशों की सबसे अच्छी होती है। सर्विया व हंगेरी में इसी काम के लिये सूअर पालने का व्यवसाय होता है। अमेरिका में यह चरबी सबसे ज्यादा तयार होती है। इंगलैंड में लगभग ४० या ४५ हजार टन लार्ड जाती है। लार्ड का तेल अलग निकाला जाता है और इसका भी व्यापार खूब है।

साबुन बनाने के लिए यह बहुत अच्छी चीज़ है और इस काम में इस्तेमाल भी बहुत होती है। इसमें सफ़ेद, नर्म और उमदा साबुन बनता है। इसके साबुन में फेन ज्यादा हो इसलिए गरी का तेल या 'मामूली चरबी' [Tallow] का मेल दिया जाता है।

इसके तेल साफ़ करने की तरकीब यह है कि तेल में कास्टिक पोटाश की टीप ४ से ८ फी सदी तक डालकर खूब बिलोवे और २४ घंटे पड़ा रहने दे। इस बीच में मैल नीचे बैठ जायगी और साफ़ तेल निथर आयगा। अगर और ज्यादा साफ़ करना हो तो 'बाईक्रोमेट आफ़ पोटाशा' (Bichcromate of Potassa) और नमक का तेज़ाब मिलाकर निथार ले।

Lastings [लास्टिंग्ज़]—एक ख़ास क़िसिम के बिनावट का ऊनी या सूती कपड़ा।

Lavender (ल्यावेन्डर)—लेवेन्डर। एक क़िसिम का विलायती अतर या अर्क़। जिस फूल का यह तयार होता है वह गो कि ग्रेट ब्रिटन में ज्यादा होता है मगर लेवेंडर फ्रांस ही में सस्ता बनता है। इस के फूल ऊनी कपड़ों में रख देने से कीड़े नहीं लगते। एक और क़िसम का ल्यावेंडर का पेड़ भी होता है जिस की पत्तियां चौड़ी होती हैं इस के तेल को 'स्पाइक आयल' (Spike Oil) कहते हैं जो वारनिश वग़ैरा में मिलाने के काम में आता है।

एक क़िसम का हलका ज़र्द रंग भी इस नाम से मशहूर है। हिन्दुस्तानी भाषा में 'लेवेण्डर' के से रंग को कौड़ियाला या कोकई रंग कहते हैं।

Lawn (लॉन)—बारीक बीसा पलम। एक क़िसिम का शाणिक (सन का) कपड़ा। Linen देखो।

Lead (लयड)—सीसा। इस धातु से गोलियां, टाइप, नल वग़ैरा बनते हैं। यह मुलायम और थोड़ी आंच में टिघलने वाला धातु होता है। यह धातु सुरमा या अंजन 'ओर आफ़ गलीना' (Ore of Galena) या 'सलफ़ाइड आफ़ लेड' (Sulphide of Lead), 'सेलूसाइल' (Celusile), 'एंग्लीसाइट' (Anglesite), 'पाइरोमारफ़ाइट' (Pyromorphite) या 'मिमेटीसाइट' (Mimetisite) से निकाला जाता है। यह ज्यादातर स्पेन, यूनाइटेड स्टेट, जरमनी और कम्बरलैंड की खानों से निकलता है। मद्रास में भी यह पाया जाता है और इसी के साथ 'बेरियम सल्फ़ेट' (Barium Sulphate) भी मिलता है। सीसा रियासत शान (बर्म्हा) में मिलता है, हिन्दुस्तान में भी कई जगह सुर्मे की हालत में पाया जाता है। प्राचीन काल में इस के निकालने का काम हिन्दुस्तान में होता था मगर अब नहीं होता है।

इस के क्षार बहुत हैं मगर मशहूर यह हैं, सिंधूर (Minium), सेंदुर (Red Lead) लाल पक्का रंग इन से तयार किया जाता है। सफ़ेदा (Oxide of Lead) यह दोनों दग्ध सीसक 'म्यासिकट' (Massicat) से प्रायः तयार होते हैं। सपेदा (White Lead) या 'कारबोनेट आफ़ लेड' (Carbonate of Lead) रंग रौग़न के काम बहुत आता है। सिंदुर और सुरमा पत्थर (Oxide of lead and Antimony) के मेल से पीला रौग़न बरतन बग़ैरा रंगने का बनता है, पेवड़ी-विलायती (Chromate of Lead), मुर्दासंग (Litharge) मट्टी के बरतन पर रौग़न करने के काम आता है। सीसे की खान में प्रायः चांदी भी निकलती है।

सीसा कई मिश्रित धातुओं में मिलाया जाता है, सीसे के पाइप और छर्रे भी बनते हैं। छर्रे में अंटीमनी, संखिया या हरताल का मेल दिया रहता है जिस से उसमें कड़ाई आ जाती है। सीसे से बिदरी के काम बहुत बनाए जाते हैं।

अब ज्यादातर सीसा इस देश में विदेश से आता है सन १९०८-९ में १,३८,२८७ हंडर मालियती १९·३६ लाख रुपये का और सन १९०९-१० में १,३५,९४६ हंडरवेट मालियती १८·४४ लाख रुपये का आया।

सपेदा (White lead) जो बाज़ार में मिलता है वह खालिस नहीं रहता बलके उसमें महीन खड़िया या बेरीटा वग़ैरा मिला रहता है। सीसे की पतली तख़तियां 'माल्ट' सिरके में लटकाकर बरतन को गोबर से ढांप देते हैं सपेदा बन जाता है। सपेदा का पूरा हाल [Pigment] में देखो।

नुसखा—पोटाश की टीप (Ley) में सीसा को ग़ोता देकर किसी सख़्त चीज़ से रगड़ने पर यह साफ़ किया जाता है, कभी कभी उसे नमक के तेज़ाब में भी दोबारा ग़ोता देते हैं।

Leather [लेदर]—चमड़ा, पका हुआ चमड़ा। जानवरों की खालों को सड़ने गलने से बचाने के लिए और उन्हें मज़बूत व चिम्मड़ व नर्म रखने के लिए ख़ास तरकीबों से तयार की हुई खाल को चमड़ा कहते हैं। कई चीज़ों के 'कसाव' (Tannic Acid) के ज़रिये से चमड़ा तयार होता है। यूं तो सभी जानवरों की खाल से चमड़ा तयार हो सकता है, परन्तु चंद ही जानवरों की खाल चमड़ा बनाने के काम आती है। भैंस व गाय बैल की खाल ख़ास कर के हिन्दुस्तान से और घोड़ों की खाल सौथ अमेरिका से बहुत रवाना होकर बाहर चलान हुआ करता है। खालों को सड़ने से बचाने के लिए नमक, संखिया इत्यादि मसाला पोत कर रवाना करना पड़ता है।

खाल को कुछ दिनों तक पानी में तर रखते हैं जिसमें उस में का लहू, समाया हुआ नमक वग़ैरा दूर हो जाय। इस के बाद रोएं छीले जाते हैं और तब चूने और नमक में फिर तर कर के उस में की चरबी का अंश साफ़ करते हैं। इस के बाद चमड़े खींच और तान कर फैलाए जाते हैं जिस से उन के बारीक बारीक रोमकूप (सुराख) खुल जाते हैं, यह काम इसलिए किया जाता है कि वह कसाव पी सकें। फिर चमड़े को कसाव में डालते हैं ज्यों ज्यों दिन बीतता हैं त्यों त्यों तेज़ कसाव में चमड़ा तर किया जाता है (कई हौद नर्म व तेज़ कसाव के रहते हैं)। एक सप्ताह तक कसाव में तर रखने के बाद चमड़ा निकाल कर सुखाया जाता है। सुखाने में

बड़ी इहतियात करनी पड़ती है। तब आख़ीर में चमड़ा 'तयार' (Finish) किया जाता है। इस क्रिया को 'पकाना' कहते हैं।

चमड़े तयार करने की विद्या ही अलग है इस में और इस के विधान में बहुत तरक्की की गई है। चमड़े भी कई तरीक़े से तयार होते हैं उनके नाम भी जूदे जूदे हैं। एक नया तरीक़ा 'क्रोम प्रोसेस' (Chrome Process) निकला है जिस से बहुत उमदा और बहुत जल्द चमड़े तयार हो जाते हैं। पहिले चमड़े पकाने में १ से १८ महीने तक लग जाते थे और अब इस तरकीब से ज्यादा से ज्यादा ७ दिन लगते हैं। 'क्रोम प्रोसेस' भी दो तरह से किया जाता है।

ख़ास ख़ास क़िसम चमड़े की यह है:—

(१) 'मोरक्को लेदर' (Morocco Leather)—यह भेड़ की खाल है जिस के तयार करने में 'सुमाक' (Sumach) का कसाव इस्तेमाल होता है।

(२) 'रोन लेदर' (Roan Leather)—यह भी 'मोरक्को लेदर' की तरह तयार होता है।

(३) 'रशियन लेदर' (Russian Leather)—यह एक क़िस्म का खूब नर्म और चिकना चमड़ा होता है जिस में 'बर्च बार्क' याने भोजपत्र के छाल का तेल चुपड़ा रहता है।

(४) 'शेमाय लेदर' (Chamois Leather) याने किमुख्त या 'साबड़' जो ख़ास करके हिमालय के 'गोराल' नामक जानवर की खाल है, यह सिर्फ़ तेल से तयार किया जाता है कसाव की ज़रूरत नहीं पड़ती।

चमड़े से जूते, बूट, परतले, चपरास, दस्ताने, ज़ीन वग़ैरा अनेक चीज़ें तयार होती हैं।

चमड़े बहुत धूप या तेज़ गरमी पाकर जल्द ख़राब हो जाते हैं और तड़कने लगते हैं। घोड़ों के साज वग़ैरा पानी में भीगने पर या उन को कोसे पानी से धोने से उस में हानि होती है मगर धोने

के बादही अगर तेल लगा दिया जाय तो नुक़सान नहीं होने पाता। जब चमड़े पर का वारनिश कम होने लगे तो उस पर नई वारनिश चढ़ाते रहना चाहिए इस से चमड़ा मज़बूत और मुलायम बना रहेगा। चमड़े का फ़ीता या 'बेल्ट' (Belts) वग़ैरा को गर्म गर्म तेल और चरबी में डाल कर फिर गर्म पानी में डालने से वह तेल भी पी लेता है और जो तेल और चरबी ज्यादा लगी रहती है वह छूट कर पानी में मिल जाती है। और बेल्ट में हर तीसरे महीने चरबी मल देना चाहिए। ४ भाग मछली का तेल, १ भाग चरबी, १ भाग कोलोफ़ोनियम (Colophonium) और १ भाग उड टार मिला कर उमदा मसाला बनता है।

[१] घोड़े के साज का पालिश—४ औंस सरेस, १५ छिटांक सिरका, २ औंस गोंद बबूल, ५ छिटांक काजल या काली स्याही और २ ड्राम आइसिनग्लास। सरेस को कूट कर सिरके में तर करे और जब वह फूल जाय तब उसे आग पर गलावे मगर उबलने न दे। इस बीच में गोंद को स्याही के साथ घुला ले और आइसिनग्लास को थोड़ा पानी मिलाकर गर्म जगह रख कर ढीली कर ले। जब सरेस पतला हो जाय तब उस में घुली गोंद व स्याही मिलावे और कुछ आंच खा लेने पर उस में आइसिनग्लाल मिलाकर उतार ले। जब ज़रूरत हो तब आंच पर टिघला कर काम में लावे। यह बूट वग़ैरा के काम में भी आ सकती है।

(क) १ पाव शीरा, १ औंस काजल, १ चमच यास्ट याने खमर और एक औंस शक्कर, ज़ीतून का तेल, कतीरा और आइसिन-ग्लास। इन सब को 'स्टेट बीयर' में मिला कर १ घंटे तक आंच के आगे पड़ा रक्खे।

(ख) ८ भाग शीरा, १ भाग काजल, १ भाग मीठा तेल, १ भाग गोंद बबूल, १ भाग आइसिनग्लस और ३२ भाग पानी गर्म करके ठंडा हो जाने पर १ औंस स्पिरिट शराब मिला ले। अगर मसाला जम जाय तो गर्म पानी में बोतल रख कर टिघला ले।

(२) बूट और जूतों की वारनिश—१० छिटांक अलसी का तेल, १ पाव यखनी और १ पाव मोम और थोड़ी सी राल गर्म बरतन में बंद कर के उबाले ले। फिर ब्रश से दो बार जूते पर चढ़ा देने से वह वाटरप्रूफ़ होजायगा।

(३) 'बफ़' कलर का चमड़ा साफ़ करना—१० छिटांक पानी १ औंस आक्जालिक एसिड घोल कर इस से धोए और बाद में चरबी मल दे।

(४) रेंड़ी का तेल मल देने से पुराना सूखा हुआ चमड़ा भी मुलायम हो जाता है।

(५) चमड़ा जोड़ने का सीमेंट—बाइसलफ़ाइड आफ़ कार्बन में गटापरचा घोल कर कुछ गाढ़ा कर ले। इस मसाले को जोड़ पर डाल कर और ज़रा सी आंच देखाकर फ़ौरन जोड़ दे और हथौड़े से पीट दे।

(६) लेदर वारनिश—१२ भाग चपड़ा लाख, ५ भाग सफ़ेद तारपीन, २ भाग संद्रस, १ काजल इनको ४ भाग तारपीन तेल और ९६ भाग अलकोहल में घुला ले।

चमड़े और चमड़े की बनी चीज़ें ३६,३२,६१८) की सन १९०८-९ में और ३३,२१,५११ रु० की सन १९०९-१० में बिदेशों से हिन्दुस्तान में आई। इनके अलावा बूट और जूते ३७,३१,०००) के सन १९०९-१० में अलग आए। पके हुए चमड़े हिन्दुस्तान से भी बाहर जाते हैं उनका ब्योरा—

१९०७-८	१९०८-९	१९०९-१०
३,८९,?,७,००० रु०	४,१२,८५,००० रु०	३,९६,८६,००० रु०

इनके अलावा ३½ लाख या ४½ लाख रुपए की मालियत तक के चलान होते है।

हिन्दुस्तान में चमड़े पकाने का काम चमार लोग अब भी पुराने ढंग से करते हैं जो बिलकुल रद्दी होता है। चमड़े पकाने के ४ कारखाने सन १९०८ में और ३ सन १९०९ में थे और चमड़े की चीज़

तयार करने के ३ कारखाने सन १९०८ में थे मगर सन १९०९ में ५ होगये यह पांचों संयुक्त प्रांत में हैं।

Leather cloth (लदर क्लाथ)—नक़ली चमड़ा। यह एक क़िस्म का बिना हुआ कपड़ा होता है जिस पर उबाला हुआ तेल और मसाला चढ़ा रहता है और देखने में चमड़े की तरह का मालूम देता है। इसे 'अमेरिकन क्लाथ' (American cloth) भी कहते हैं। यह मोंढ़े, कुरसियां, गाड़ी के टप वग़ैरा पर मढ़ने के काम में आता है। मशीन द्वारा इस पर रौग़न चढ़ाया जाता है। रौग़न का मसाला अलसी का तेल, काजल और रजन इत्यादि हैं और कई तह उनकी चढ़ाई जाती है।

Lemon (लेमन)—नीबू, लीमू, निम्बू। इसका अर्क़ खट्टा होता है, इसके छिलके में से तेल निकाला जाता है और उससे कई क़िस्म की खुशबूदार चीज़ें तयार की जाती हैं। इसका कारोबार सिसली में सब से ज्यादा होता है। हिन्दुस्तान में भी इसका कारोबार बढ़ाया जा सकता है।

अंगरेज़ी भाषा में सबसे छोटे जाति के नीबू को आमतौर से 'लाइम' (Lime), मझोले जाति को 'लेमन' (Lemon) और बड़े जाति के मोटे छिलके वाले नीबू 'सिट्रन' (Citron) कहते हैं। यह तीनों क़िस्म के नीबू हिन्दुस्तान में होते हैं परन्तु इन से जैसा चाहिये वैसा फ़ायदा नहीं उठाया जाता है।

Lemon grass oil (लेमन ग्रास आयल)—रूसा का तेल, नीमारी तेल। यह एक क़िस्म की घास का खुशबूदार तेल है। मैसूर वग़ैरा की तरफ़ यह घास बहुत होती है और इसकी मांग अच्छी रहा करती है। यह घास कई जाति की होती है और रूसा, रौंस, रोहिश, गंधबेना, मिर्चियागंध, भूतृण इत्यादि इनके नाम हैं। बिलायत के व्यापारी लोगों में इसके कई नाम मशहूर हैं जैसे 'पामारोज़ा' (Palmarosa), 'ईस्ट इंडियन जीरानियम' (East Indian Geranium), 'इंडियन ग्रास आयल' (Indian Grass Oil), 'नीमार आयल' (Nimar Oil)। इस का

तेल मुक़ाम नीमार (मध्य प्रदेश) में बहुत कशीद किया जाता है और इसी नाम से ज्यादा मशहूर है। गुलाब के इत्र में इसका मेल बहुत मिलाया जाता है, यह जमता नहीं इस से गुलाब का इत्र भी पतला बना रहता है। बम्बई से यह तेल बिलायत में बहुत भेजा जाता है। सन १८९९-१९०० में २,७८,००० रु० का, १९००-१ में ३,४१६७० रु० का, १९०१-२ में ६,१०,७८३ रु० का, १९०३-४ में ५,३८,७७४ रु० का, १९०६-७ में ३,१९,९४९ रु० का चलान हुआ था।

Lemon Oil (लेमन आयल)—नींबू का तेल। नीबू के छिलके का तेल। सिसली देश में इसका कारोबार बहुत ज्यादा होता है।

Lens (लेन्स)—ताल। कांच या 'क्रिस्टल' का गोल गोल या बादामी ताल चशमे, दूरबीन वग़ैरा में लगाने के लिए बनता है।

Leopard skin (लेर्पर्ड स्किन)—चीते का चमड़ा। हिन्दुस्तान से चीते की खाल बाहर बहुत जाया करती है। हिन्दुस्तान में भी इसकी क़दर होती है और पवित्र मानी जाती है। तंदुये की खाल को भी कहते हैं।

Leopard wood (लेपर्ड उड)—यह एक क़िस्म की लकड़ी है जिस पर स्याह गोल गोल सुन्दर दाग़ रहते हैं। इसे 'स्मोक उड' (Smoke wood) भी कहते हैं। यह 'ट्रिनिडाड' (Trinidad) और 'बृटिश गायना (British Guiana) देश का पेड़ है। यह 'लेटर उड' (Letter wood) भी कहाती है।

Lepidolite (लेपीडोलाइट)—Mica देखो।

Lepidonelene (लेपीडोनीलेन)—Mica देखो।

Letter wood (लेटर उड)—Leopard wood देखो।

Levant Gum (लेवण्ड गम)—Galbanium देखो।

Lign aloes (लिन एलोज़) - अगर।

Lignite (लिगनाइट)—एक क़िस्म का जलने या बलने काबिल खनिज पदार्थ। इसे 'ब्राउन कोल' (Brown coal) भी कहते हैं। इसी में से 'प्याराफ़िन तेल' (Paraffin oil) निकाला जाता है।

Lignum vitæ (लिग्नम विट)—यह एक क़िस्म की भारी, चिकनी, और सख्त लकड़ी होती है, हिन्दुस्तान में इसी के जोड़ की सख्त और चिकनी लकड़ी अपर बर्म्हा में होती है जो 'तबौक या तमलन कहाती है।

Lime (लाइम्)—निम्बू, नीबू। यह कइ क़िस्म के निम्बू के जाति के फल होते हैं। इनमें से 'साइट्रिक एसिड' (Citric acid) तयार किया जाता है।

नीबू की क़िस्में (१) जंभीरी नीबू [२] मीठा नीबू [३] काग़ज़ी नीबू [४] पाती नीबू [५] खट्टा नीबू [६] बिजौरा नीबू या तुरंज [७] पहाड़ी नीबू या करना नीबू [८] महांनीबू या बटावी नीबू [९] मीठा नीबू [१०] चीनी गोरा नीबू इत्यादि।

Lime, Otto of [ओटा आफ़ लाइम्]—सन्त्रे का इत्रे। सन्तरे के छिलके से निकाला जाता है। छिलकों को दबाकर उस में का सुगंधित ते निकाल लेते हैं।

Lime [लाइम्]—एक क़िस्म के पेड़ की लकड़ी जो 'टिलिया' [Tilia] या 'लिंडन ट्री' [Linden tree] भी कहलाती है। यह लकड़ी हलकी और चिकनी होती है इसके कोयले बारूद बनाने के काम बहुत आते हैं।

Lime [लाइम्]—चूना, कली। यह दो क़िस्म का होता है एक बिना बुझा चूना या कली का चूना [Quick lime] दूसरा चूना या बुझा हुआ चूना [Slaked hydrate of lime]। चूना इमारती काम जोड़ने और दीवारों पर सफ़ेदी करने के काम आता है और मेराइ याने निखार करने, साबुन तयार करने, छींट छापने इत्यादि में भी काम देता है। हिन्दुस्तान में पान के साथ खाया जाता है। चूना कई तरह का होता है बरी या कंकड़ का चूना [Kanker lime], कत्तल या पत्थर का चूना [Lime Stone lime], सीप का चूना [Shell lime], शंख का चूना [Conch lime], संगमरमर का चूना [Marble lime], संगेयहद का चूना (Fossil coal lime) या मूंगा भस्म (Coral lime) इत्यादि।

पत्थर का चूना बनाने के कई बड़े कारखाने जबलपुर, सतना, सिलहट, रोहतासगढ़ वग़ैरा में खुले हैं और ये चूने उन्हीं मुक़ामों के नाम से मशहूर हैं। इसका बहुत बड़ा कारोबार होता है। चूना तयार करने के भट्टे हर बड़े शहरों में प्रायः होते हैं। कंकड़, पत्थर इत्यादि फूक कर चूना बनता है। हिन्दुस्तान के अन्दर इमारती काम इत्यादि के लिये कितना चूना खपता है इसका अंदाज़ा लगाना मुशकिल है सिर्फ़ इतना ही कहना काफ़ी है कि इसकी खपत बेहद है।

Lime, Chloride of [क्लोराइड आफ़ लाइम]—निथार या निखार का मसाला। इसे 'ब्लीचिंग पौडर' [Bleaching Powder] भी कहते हैं। सीसे के सन्दूक़ों में बुझा चुना भरकर उसमें 'क्लोराइन गेस' [Chlorine gas] प्रवेश करने से यह मसाला तयार किया जाता है।

Lime Stone [लाइम स्टोन]—चूने का पत्थर, कालि या कलई का पत्थर, चूनेदार पत्थर। आम तौर से यह ज़र्दी मायल सफ़ेद रंग के पत्थर होते हैं, इनमें खड़िया भी शामिल है। चूने के पत्थर कई क़िस्म के होते हैं मुशकिल से कोई पहाड़ ऐसा मिलेगा जिसमें 'चूने के पत्थर' न हों। कई क़िस्म के 'चूनेदार' उमदा पत्थर संगमरमर के नाम से मशहूर हैं लेकिन 'भूगर्भविद्या' (Geology) में उनके जुदे जुदे नाम हैं जैसे 'डोलोमाइट' (Dolomite), 'मिलिओटाइट' (Miliotite) वग़ैरा।

हिन्दुस्तान में लगभग २० क़िस्म के इमारती पत्थर ऐसे हैं जिन से चूना निकलता है जिनमें से कुई तो संगमरमर की क़िस्म में से है। चूने का पत्थर (१) सतना (रियासत रीवां) और कटनी (जबलपुर) में सब से अच्छा मिलता है, यह चूना दूर दूर तक बिकने जाता है (२) सिलहट का चूना (Nummulitic lime stone) जाति के पत्थर से निकलता है (३) रोहतासगढ़ का चूना। इनके अलावा हिमालय पहाड़ के पत्थर और और कई जगह के पत्थर से भी चूना निकाला जाता है। कंकड़ का चूना मशहूर ही है।

अब संगममर का कुछ हाल बग़ैर लिखे यह मज़मून अधूरा रह जाता है। (१) मकराने का संगमरमर—सब से अच्छा और खूबसूरत

होता है और मारवाड़ या जोधपुर में साम्भर झील के क़रीब मिलता है (२) रायवाला संगमरमर—यह मकराने से कड़ा होता है और अलवर में पाया जाता है (३) झीरी का संगमरमर—यह भी अलवर के रियासत में मिलता है और मकराने से बहुत ज्यादा कड़ा होता है [४] खट्टू—यह ज़र्द रंग का पत्थर जैसलमेर में होता है और बहुत ज्यादा निकलता है [५] संग मूसा या काला संगमरमर या बैंसलाना का काला पत्थर या गया का पत्थर—यह सब काले रंग के पत्थर हैं [६] रायवाले में गुलाबी और नीला और सब्ज़ा पत्थर बहुत मिलता है [७] नूरपुर और शाहपुर में बादल (Onyx marble) नाम का पत्थर और और भी कई तरह के सुन्दर पत्थर मिलते हैं [८] मोतीपुर [बरौदा] का लहरियेदार सब्ज़ा पत्थर बहुत खूबसूरत होता है। यह सब आरायशी काम में आते हैं। ताजमहल [आगरा] में जो क़ीमती पत्थर तरह तरह के लगे हैं वे इतने उमदा हैं कि आज तीन सौ बरस हो जाने पर भी उन पर दाग़ या मैलापन नहीं आया। संग सफ़ेद जिसे संगे जराहत या कुलनार [Gypsum] कहते हैं, यह भी चूनेदार पत्थर हैं मगर ऊपर लिखे पत्थरों से इतना फ़रक है कि इनमें गंधक का मेल है याने यह 'सल्फ़ेट आफ़ लाइम' [Sulphate of lime] हैं और वे 'कारबोनेट आफ़ लाइम' [Carbonate of lime] याने चूनेदार हैं। 'जिपसम' की तीन क़िस्मे हैं [१] 'अलाबास्टर' [Alabastar] यह बहुत ही चिकना होता है [२] 'सेलेनाइट' [Selenite] जो साफ़, शफ़ाफ़ और कुछ पारदर्शक होता है और [३] 'सेटिन स्पार' [Satin spar] जिसकी बनावट में रेशे होते हैं। कुल्नार [Gypsum] को भट्टे में फूंक कर पानी में बुझाने पर फिर पीस लेने से प्लास्टर आफ़ पेरिस की तरह काम देता है।

Linen (लिनन)—शाणक, अताशी, क्षुमा, लिनन। सन वग़ैरा से जो उमदा कपड़े बनते हैं उसे लिनन या 'छालटी' कहते हैं। इसके कारखाने मुक़ाम बेलफ़ास्ट Belfast (Ireland), 'लीड' Leeds (England) और डंडी (Dundee, Scotland) में बहुत हैं। बारीक सफ़ेद बीला पलम [White fine lawns], कमरक या अद्धी या हल्लान [Cambrics],

ला (Shirtings) वग़ैरा उमदा पहिनने के कपड़े और पाल (Sail cloth), किरमिच (Canvas) वग़ैरा मोटे थान सन के रेशों से ही बिने जाते हैं। छलटी का सूत 'लिनन थ्रेड' (Linen thread) भी बहुत आता है।

(१) दाग़ छुड़ाना—जब किसी शाणिक कपड़े पर दाग़ पड़ जाय तब धोबी को देने के पहिले उस पर दाग़ छुड़ा लेना चाहिये। अगर चांदी के तेज़ाब का दाग़ हो तो सायानाइड आफ़ पोटाशियम लगा कर रगड़े। अगर उस पर कोई ज़र्द धब्बा पड़ जाय, जैसा कि लोहे के साथ लगने से पड़ जाता है, जिसे भाषा में लोहे के 'मोरचे का दाग़' कहते हैं तो नमक के तेज़ाब या गर्म गर्म आक्ज़ालिक एसिड लगा कर दूर करे और बाद में गर्म जल से धो डाले।

Linoleum (लिनोलियम)—एक क़िस्म का बिछाने का फ़र्श जो कार्क (खुकड़ी) की बुकनी और इंडियन-रबड़ को गूंध कर और बेल कर फ़र्शनुमा बना दिया जाता है। इस पर छींट छापी जा सकती है। यह आयल-क्लाथ से ज्यादा मज़बूत होता है। घटिया क़िस्म का 'लिनोलियम' अलसी का तेल, लकड़ी का बुरादा, खड़िया, मट्टी, पिच और भी कई चीज़ें मिला कर बनाया जाता है।

Linseed (लिनसीड)—अलसी, अतसी। अलसी के बीज से तेल निकलता है और पौधों से रेशे। हिन्दुस्तान से यह बहुत चलान होती रहती है। इसके तेल की बहुत मांग विलायत में रहती है और इसीलिए अलसी के बीज हिन्दुस्तान से वहां बहुत भेजे जाते हैं। हिन्दुस्तान ही में इसका तेल निकाल कर अगर रवाना किया जाय तो बहुत मुनाफ़ा हो। इसका तेल बड़े काम की चीज़ है इसी से रौग़न, वारनिश, छापने की स्याही, आयल-क्लाथ वग़ैरा अनेक प्रकार की चीज़ें तयार की जाती हैं और इसकी खली मवेशियों की उमदा खुराक है।

सन १९०८-९ में १२,८१,८२६ एकड़ अलसी काश्त हुई थी। सन १९०८-९ के पैदावार का तख़मीना २,८७,७०० टन और १९०९-१० के पैदावार का तख़मीना ४,२७,६०० टन किया गया था इस में से

२,५५,५३,००० रु० का सन १९०८-९ में ३२,१०,००० हंडरवेट और सन १९०९-१० में ४६,७७,००० हंडरवेट अलसी मालियती ३,९२,५३,००० रु० की हिन्दुस्तान से रवाना हुई। यूनाइटेड किंगडम ने १५८·४० लाख, फ्रांस ने ९१·९८ लाख, इटली ने ४४·३२ लाख, बेलाजयम ने ३९·४३ लाख और जरमनी ने ३१·२५ लाख रुपए की लिया।

अगर हिन्दुस्तान ही से तेल निकाल कर भेजा जाय तो एक तो किराये की कमी हो दूसरे खली मवेशियों के खाने को बच रहे और खाद ज़मीन की कम न हो जो अब बाहर चली जाया करती है इसी से यहां की पैदावार कम हो रही है। आश्चर्य की बात है कि उलटा विलायत से यह तेल हिन्दुस्तान में आता है, सन १९०८-९ में ६·७२ लाख का और सन १९०९-१० में ५·९३ लाख रुपए का तेल खाली अलसी का विदेशों से आया। तेल निकालने के बड़े कारखाने हिन्दुस्तान में गोकि सन १९०८ में १८ और सन १९०९ में २१ थे मगर सिर्फ़ अलसी का तेल निकालने वाला एकही कारखाना 'गौरीपुर कम्पनी लिमिटेड' कलकत्ते के क़रीब है। इस कारखाने का तेल और खली सब जगह जाकर बिकती है। इस कारखाने के अलावा और कै कारखाने इस का तेल निकालते हैं यह कहना कठिन है।

खूब पकी हुई अलसी का तेल उमदा होता है और सफ़ेद शीशी में रख कर देखने पर ज़र्द, पतला और चमकदार मालूम देता है और खराब या कच्ची अलसी का तेल मैला, गाढ़ा और भारी दिखाई देगा।

(१) अलसी के तेल का वारनिश—६० भाग तेल में २ भाग मुर्दासंग और १ भाग सफ़ेद तूतिया मिला कर खूब उबाले। यह जल्द सूख जाने वाली वारनिश है।

(२) तेल साफ़ करना—हुनर के काम में लाने के लिये यह ज़रूरी बात है कि तेल शुद्ध और निर्मल हो नहीं तो काम उमदा न होगा। तेल साफ़ करना बहुत सहज है। मामूली तौर से तो बोतल में रख कर कई दिन तक धूप दिखाने से वह स्वच्छ हो जायगा। इसमें देर लगती है इस लिए तीन चौथाई बोतल तेल लेकर उसमे थोड़ी सी पिसी हुई साफ़ खड़िया (Whiting)

अखरोट के बराबर उसमें डाल कर खूब मिला दे (बोतल हिलाकर) और बोतल को धिकती हुई अंगीठी में रक्खे। थोड़ी देर (या कभी कभी २ दिन भी लग जाता है) बाद खड़िया मैल के सहित नीचे बैठ जायगी और तेल स्वच्छ व निर्मल हो जायगा।

Lint (लिंट)—लिंट। एक क़िस्म का रोंएंदार या झीना मुलायम कपड़ा जो ज़ख़म में दवा के साथ भरने के काम आता है। इसके बिनने की अब मशीन बन गई है जिससे बारीक झीना कपड़ा सन से बिना जाता है और उसके एक तरफ़ रोएं सरीखे मुलायम रूई के पश्म रहते हैं।

Liqueurs (लिकर्ज़)—लिकर। कई क़िस्म की पीने लायक शराब जो अलकोहल में कई तरह के मसाले डाल कर तयार होती है। Charteruse नामक शराब तयार करने का तरीक़ा गोपन रक्खा गया है। यह सब्ज़ी मायल या ज़र्दी मायल दो रंग की होती है।

Liquidamber (लिक्विडाम्बर) यह एक क़िस्म का 'रसाम्बर' या 'गीली लोबान' है जो चन्द क़िसिम के पेड़ों मेंसे पछना लगा कर निकाली जाती है। यह खुशबूदार राल या शीरा तमाखू में खुश्बू लाने के लिए इस्तेमाल होती है और कपड़े में लगाने से उसमें कीड़े नहीं लगते।

इसी जाति की दूसरी चीज़ जिसे हिन्दुस्तानी भाषा में 'रसमाला, रसामल, सिलारस, या ज़ुटीली' कहते हैं, इसी नाम के एक पेड़ से निकलती है जो आसाम, बर्म्हा और जावा द्वीप में होता है। यह राल 'बर्मीज़ स्टोराक्स' (Burmese Storax) भी कहाती है। बम्बई में यह बहुत आती है और वैद्यक और तबाबत में इस का इस्तेमाल बतौर दवा के किया जाता है। बर्म्हा और जावा की सिलारस लग भग एक तरह की होती है मगर एशिया-माइनर की सिलारस से घटिया। एशिया माईनर की 'सिलारस' की 'लिक्विड स्टोराक्स' (Liquid storax) याने 'गीली लोबान' कहते हैं।

Litharge [लिथार्ज]—मुर्दासंख, मुर्दासंग। यह असल, में फुका हुआ

'मोनॉक्साइड आफ़ लेड' (Monoxide of lead) है। खालिस व बेमेल मुर्दासंग का (Massicit or Massicot or Protoxide of lead) कहते हैं। यह फ्लिंट कांच (Flint glass) बनाने या रंग रौग़न तयार करने के काम आता है। रौग़न में मिलाने से रौगन जल्द सूख जाता है इस लिए इस की गिनती जल्द सुखाने वाले मसाले (Driers) में। है 'म्यासिकॉट' मामूली मुर्दासंग से तेज़ और खालिस होता है और संपेद से भी जल्द सुखाने वाली चीज़ है।

Lithium (लिथियम्)—लिथियम्। यह एक क़िस्म की चांदी की तरह की सफ़ेद धात है जो बहुत कम पाई जाती है और खुली रहने से जल्द दग़ीली हो जाती है। यह सीसे से नर्म मगर नमक से कड़ी धातु है और इस की तार बख़ूबी खींची जा सकती है (यह ठोस पदार्थों में सब से ज्यादा हलकी चीज़ है। पानी में बहुत जल्द इस पर ज़ंग दौड़ जाता है जिसे 'आक्साइड आफ़ लिथियम' (Oxide of Lithium) या 'लिथिया' (lithia) कहते हैं और दवा में काम आता है। यह धातु स्वीडन (Sweden) देश में पाई जाती है। गंधक के तेज़ाब और नमक के तेज़ाब में गल जाती है। इस को बालने से सफ़ेद रौशनी होती है।

Lithographic Stone (लिथोग्राफ़िक स्टोन)—लिथो या छापे का पत्थर। यह नफ़ीस, कुछ सख्त और चिकना पत्थर है जिस पर लिखे हुए हरूफ़ के छाप लेकर याने चढ़ा कर फिर किताब वग़ैरा छापते हैं। भूरे रंग का पत्थर Solenhofen और Bavaria मुकामो में निकलता है और घटिया पत्थर इटली और फ्रांस से आता है। अब तो जस्ते पर मसाला लगा कर नक़ली लिथो पत्थर बनाकर छापने के काम में लाया जाता है। इस की छपाई असल पत्थर की छपाई से भी उमदा और साफ़ होती है। बारीक और नफ़ीस काम अब इसी पर छापे जाते हैं।

(१) लिथोग्राफ़िक इंक—२ औंस चरबी, २ औंस मोम (Vigrin wax), २ औंस चपड़ा लाख, २ औंस साबुन और आध औंस

काजल। चरबी और मोम पतीली में रख कर आग पर चढ़ावे पतीली ढँकी रहे और इतनी आंच दे कि तेल में से ज्वाला उठने लगे उसी वक्त साबुन के छोटे छोटे क़तले उस में डाले एक एक करके (यानि जब एक टुकड़ा गल जाय तब दूसरा छोड़ा जाय) इस तरह जलाता जलाता एक तिहाई मसाला जब रह जाय तब लाख डाले और जब वह गल जाय तब ऊपर की ज्वाला बुता देवे और पतीली उतार ले। अगर कुछ कसर बाक़ी रह जाय तो फिर आग पर चढ़ावे मगर उस पर ज्वाला न बलने दे। अब काजल डाले जब खूब मिल जुल जाय तब उतार कर संगमर्मर पर ढाल ले और भारी बोझ से दबा दे। यह सब काम होशियारी और तजरूबे के हैं मगर मुशकिल नहीं।

[२] लिथोग्राफ़िक चाक—मामूली साबुन १½ औंस, चरबी २ औंस, बराजिन मोम २½ औंस, चपड़ा लाख १ औंस और काजल ¼ औंस। इनको उसी तरह तयार करे जिस तरह लिथोग्राफिक इंक की तरकीब ऊपर दी गई है।

[३] लिथोग्राफ़ी के काग़ज़ का लेप—थोड़े से पानी में कतीरे की गोंद ½ औंस घुलाओ और छानकर उसमें १ औंस सरेस और ½ औंस औसार रेवंद [Gamboge] मिलालो। इसके बाद ४ औंस संग जराहत [French chalk], ½ औंस पुराना प्लास्टर आफ़ पेरिस और १ औंस नशास्ता [Starch] या मैदा लेकर सब को एक में हल करो और पानी मिला कर तेल सरीखा करलो और ब्रश से काग़ज़ पर लगा दो।

Litmus (लिटमस) नीला रंग जो कई क़िस्म के पेड़ से निकलता है। सोडा या पोटाश मिलाकर इस की गिट्टियां बनाली जाती हैं। रासायनिक क्रिया में यह बड़े काम आती है, जिस किसी चीज़ में कोई भी एसिड मौजूद हो तो इस में लगाने से पता लग जाता है, क्योंकि एसिड में इस का लाल रंग हो जाता है।

Lode (लोड)—लोध। यह हिमालय का एक छोटा पेड़ है। इसकी छाल और पत्तियां रँगने के काम में आती हैं। लोध दूसरे रँगों के साथ रंगने के काम आता है। इसका पेड़ कुमाऊँ से आसाम तक हिमालय

में होता है और छोटा नागपुर की तरफ़ भी पाया जाता है। इसकी छाल और पत्तियां रंगने के काम आती हैं। लोध अक्सर दूसरे रंग की छाल वग़ैरा के साथ मिलाकर रंगने में इस्तेमाल होता है। छाल दवा के काम आती है। इस पेड़ की लकड़ी अगर पकी हुई हो तो मज़बूत होती है मगर जल्द ऐंट व तड़क जाती है।

Log wood (लाग उड)—लागउड, अमेरिका का पतंग, विलायती पतंग। जैसे हिन्दुस्तान में पतंग की लकड़ी से रंग निकाला जाता है वैसे ही इस लकड़ी से भी रंग निकाला जाता है इसलिए इसे 'अमेरिका का पतंग' कहना बेजा नहीं है। रेशम या ऊन रंगने में इसका काढ़ा या रंग बहुत इस्तेमाल होता है। इसका रँग गहरा कत्थई या स्याह होता है। लाल या काली रोशनाइ बनाने मे भी काम आता है। इसकी छाल अतिसार की बीमारी में दी जाती है। इसकी लकड़ी सख्त, चिकनी, खूब चलनेवाली होती है, इसपर पालिश खूब होती है और यह इतनी भारी होती है कि पानी में डूब जाती है। जमैका [Jamaica] और होंडरस [Honduras] देश से बहुत चलान होकर आती है।

Love-lies-bleeding (लव-लाइज़-ब्लीडिंग)—रामदाना, केदारीचूआ। व्रत के दिनों में रामदाना का लड्डू हिन्दु लोग खाते हैं, हलकी ग़िज़ा है।

Lubricant (लुब्रीक्यण्ट)—मशीनों में चुपुड़ने का तेल। मशीनों के पुरज़े या धुर चलती वक्त रगड़ खाते हैं, इस से कुछ तो ज़ोर ज्यादा लगता है और कुछ लोहा घिसता है, इन दोनों बातों को रोकने या कम करने के लिए चिकनाहट देनी पड़ती है। यह मसाला कई तरह का बनता है और बाज़ारों में बहुत मिलता है। चंद नुसखे नीचे लिख दिए जाते हैं:—

[१] रगड़ कम करने वाला लुब्रीकांट—ब्लाक लेड [जिस से पेंसिल बनती है और जो मुर्दासीसा कहाता है] १ भाग और सूअर की चरबी ४ भाग खूब घोटकर तयार करे।

[क] ३ या ४ गेलन पानी में २५ सेर सोडा उबाल कर मिला ले। एक ताम्बे की कड़ाही में लगभग ८३ या

८४ सेर चरबी या खजूर का तेल टिघलावे जब यह कुछ ठंडा हो जाय तब सोडा का पानी धीरे धीरे डाल कर मिलाता जाय ।

[२] न चिकटनेवाला तेल—अलकोहल को उबालें और उसमें बूंद बूंद ज़ीतून का तेल डालता जाय जब तक कि तेल उसमें समाता रहे । फिर उतार कर अलग रखले । इस में गाद नीचे बैठेगी, जब सब गाद बैठकर तेल साफ़ निथर जाय तब ब्लाटिंग पेपर में छान ले । यह तेल न तो जमेगा और न चिकटेगा।

[३] घड़ीसाज़ी का तेल—'नीट फुट आयल' [Neet's foot oil] लेकर उसमें सीसा रेत कर डाल दे जिसमें तेल की खार मर जाय । कुछ दिनों इसे पड़ा रक्खे जितना पुराना होगा उतना ही नफ़ीस तेल होगा । यह उमदा तेल बनेगा ।

[क] उमदा ज़ीतून के तेल को उबलते हुए पानी में डालकर खूब घोटे फिर पानी में से अलग करके उसमें थोड़ा सा ताज़ा चूना मिलाकर कई हफ़्ताह तक पड़ा रहने दे और धूप दिखलाता रहे [खयाल रहे कि उस में गर्द या धूल न पड़ने पावे] यह तेल भी खासा है ।

[ख] बादाम के तेल में सात या आठ गुना तेज़ आलकोहल मिलाकर उबाले और घोटे जब उबलना शुरू हो तब उतार कर ठंडा होने दे और निथरा हुआ तेल अलग कर ले ।

Lucifer Matches [लूसिफ़र म्याचेज़]—Matches देखो ।

Luminous Paint [लूमिनस पेण्ट]—दमकदार रौग़न । यह एक प्रकार का रौग़न या बारनिश है जो अंधेरे में भी चमकती व दमकती है । 'सलफ़ाइड' या 'आक्सी-सलफ़ाइड आफ़ क्यलशियम' [Sulphide or Oxysulphide of Calcium] को पीसकर बेरंगे या सादे बारनिश में मिलाकर लगाई जाती है ।

Lunkah [लंका]—लंका का तमाखू। यह एक क़िस्म का तमाखू है जो सिलोन में गोदावरी नदी के तट पर बोआ जाता है। यह कड़ा तमाखू होता है।

Lycopodium (लाइकोपेडियम)—यह एक ज़ात के पेड़ का 'केशर' या 'सफ़ूफ़' है जो गोलियों पर मला जाता है या आतशबाज़ी में फुलझड़ी छूटने के लिए मिलाया जाता है। रूस से यह बहुत आता है।

Lynx [लिंक्स]—एक क़िस्म का जंगली जानवर जिसकी पोस्तीन या रोएं बड़े मुलायम होते हैं। यह सब जगह पाया जाता है परन्तु केनेडा [Canada] देश के जानवर की पोस्तीन की ज्यादा मांग रहती है।

M.

Macaroni (म्यकरोनी)—एक क़िस्म की मोटी सेमियां या संवई या मोटा सेव जो कठिया गेहूँ के आटे से, जिसे 'म्याकरोनी व्हीट' (Macaroni wheat) कहते हैं, बनाया जाता है। यह चीज़ इटली में ज्यादा खाई जाती है। आटा गूंध कर लम्बी संवई पोली नली में दबा कर बनाई जाती है। जो ज्यादा पतली होती है उसे 'वर्मीसेली' (Vermicelli) मशीन सेंविया, सेवैयां कहते हैं।

जिस गेहूं की 'बाली' ज्यादा बालदार होती है और डंठल ठोस और जिसके दाने कठिया, कड़े, और नोकीले होते हैं उसे Macaroni wheat याने मेकोरोनी गेहूं कहते हैं।

Macassar Hair-oil (म्यकसर हेयर-आयल)—सिर में लगाने का मशहूर तेल। असल में मकेसर आयल 'गौसम' या 'कोसुम' या 'कुसुम्ब' (Ceylone Oak, Schleichera Trijuga, Lac Tree) के बीज का तेल है जिस से बाल साफ़ रहते हैं और खूब बढ़ते हैं इस पेड़ पर लाख के कीड़े रायपुर व बिलासपुर में बहुत पाले जाते हैं। इसकी लकड़ी बहुत सख्त, कड़ी, मज़बूत होती है और इसके कोल्हू, हल, गाड़ी के पहिये, ओटने इत्यादि बनाये जाते हैं। इसके बीज की मांग विलायत में होती है मगर देहाती लोग इसे खाया करते हैं इस लिये चलान के लिये काफ़ी बीज नहीं मिलता। इस तेल में कुसुम (Safflower) के बीज का तेल भी मिला रहता है। इसके तेल निकालने का कारखाना जारी करने से इसके तेल से फ़ायदा उठाया जा सकता है।

Mace (मेस)—जावित्री। जायफल का भीतरी छिलका जालीदार होता है, उसी का नाम जावित्री है यह खुशबूदार चीज़ मलक्का (Moluccas) टापुओं में बहुत होता है। नीलगिरी पहाड़ के पूरब कोनूर के दूनों

या खड्डों में भी इसका पेड़ होता है। सुबह के वक्त जितने फल गिरे होते हैं वह बटोर लिए जाते हैं और उनका छिल्का उतार कर जावित्री निकाल ली जाती है जो छाए में और आग पर सुखा ली जाती है, फिर मूसलों से तोड़ कर चूना मल दिया जाता है जिसमें कीड़ा न लगे। जावित्री सूखने पर सुर्खी मायल ज़र्द हो जाती है। जायफल में से तेल भी निकाला जाता है। जायफल के चूर को गर्म गर्म भाप देकर दबाने से एक प्रकार का 'स्थाई तैल' (Fixed Oil) निकलता है और भभके से चुआ कर 'उड़नेवाला तेल' (Essential Oil) या रूह निकाली जाती है जो सफ़ेद रंग की होती है। जायफल और जावित्री दोनों को रूह खुशबूदार चीज़ें हैं और इत्र बनाने के काम में बहुत आती है।

यह हर साल दो ढाई लाख रुपए की हिन्दुस्तान में आती है सन १९०४-५ में लगभग १०६८५ मन मालियती ३१००७१ रु० की और सन १९०६-७ में ८९३७१ मन मालियती २२८४५३ रु० की आई थी। यह बहुत ज्यादा स्ट्रेट सेटलमेंट से ही यहां आती है।

Mackerel (म्याकरल)—इला मछली। यह मछली बहुत खाई जाती है और इसका बहुत व्यापार होता है।

Madder (म्याड्डर)—मजीठ। कपड़ा वा ऊन लाल रंग रंगने के काम में बहुत आती है मगर अब बुकनी रंग चल जाने से इसका इस्तेमाल कम होता जाता है। इसकी जड़ से 'टरकी रेड' (गुलनार) रंग निकलता है। मजीठ फ़ारस से भी बम्बई में बहुत आती है। सन १९०५-६ में ११३६५ रु० की और सन १९०६-७ में ५४०५ रु० की आई थी। हिन्दुस्तान से यह चलान भी होती है सन १९०४-५ में २५३८ रु० का और १९०६-७ में १५०० रु० की रवाना हुई थी। यह पेड़ कई क़िस्म का होता है (१) मजीठ (Indian Madder, Rubia Cordifolia)—यह पंजाब की तरफ़ पहाड़ में होता है, यही असल मजीठ है। (२) मोयूम (R. Sikimensis)—यह मिशमी पहाड़, भूटान, नागा पहाड़ में होता है, नागा लोग इस से बाल रंगते हैं। (३) बचों, रोदंग (European Madder, R. Tinctorium)—

यह काश्मीर और अफ़गानिस्तान में होता है। यह भी रंगाई के काम में पहिले बहुत लाया जाता था और विलायत में चलान भी बहुत होता था पर अब मांग बहुत कम होगई है।

Madiera wine (मेडीरा वाइन)—यह एक क़िस्म की शराब का नाम है जो मडीरा नगर में तयार की जाती है। उमदा क़िस्मों में Baal, Malmsey, Palhelinho, Sercial and Tinto नाम की शराबें हैं।

Magnesia (म्यागर्नाशिया)—मेगनीशिया। मेगनीशियम धातु का यह (Oxide) भस्म है। यह बारीक सफ़ेद रंग की बुकनी है व उक्त धातु के कारबोनेट को फूक कर निकाली जाती है। 'डोलोमाइट' (Dolomite) नाम के चूनेदार पत्थर में से मेगर्नाशियम निकलता है। 'सलफ़ेड आफ़ मेगनीशिया' (Snlphate of Magnesia) को ही 'एपसम सॉल्ट' (Epsom Salt) कहते हैं।

Magnesium (मेगनीशियम)—यह धात चांदी के रंग की होती है। इसके गुण जस्ते से बहुत मिलते जुलते हैं। इसकी तार जलाने पर खूब तेज़ रौशनी देकर बलने लगती है। अंधेरी जगह का फ़ोटो लेने में इसकी रौशनी काम देती है। यह पदार्थ आतशबाज़ी, फ़ोटोग्राफ़ी वगैरा में काम देता है। २½ औंस पदार्थ जलाने में ७४ क़न्दील के बराबर सफ़ेद रौशनी होती है। इसका लवण 'मगनीशियम क्लोराइड' (Magnesium Chloride) समुद्र के जल में पाया जाता है इसको सोडियम धातु के साथ फ़ूकने से 'मागनीशियम' (Magnesium) अलग होजाता है।

Mahogany (महोगनी)—महोगनी। यह वेस्ट इंडीज़ और सेंट्रल अमेरिका के पेड़ Swietenia Mahogani की मशहूर और क़ीमती लकड़ी है। यह चिकनी गंदुमी रंग की, खूबसूरत लकड़ीहै जिसपर पालिश खूब होती है और यह एंठती नहीं। 'हॉडोरस' (Hondorus), 'कम्पीची' (Campeachy) और West India Islands वेस्ट इंडिया के टापुओं) से बहुत आती है।

(१) महोगनी साफ़ करने का मसाला — १० छिटांक 'फ़रनीचर आयल' (Furniture Oil) में ५ छिटांक स्पिरिट आफ़ तरपेण्टाइन और ५ छिटांक सिरका मिला ले और एक कपड़े को तर करके महोगनी की चीज़ पर फेरे और फलालैन की गद्दी से पालिश कर ले।

Mahogany, Indian (इंडियन मेहोगनी)—तुन, तुन की लकड़ी । इसे अंगरेज़ी में The Toon or Moulmene Cedar भी कहते हैं ॥ सिंधु नदी से शिकिम तक हिमालय की तराई में होता है । इसकी लकड़ी खुशबूदार और मज़बूत होती है । इसमें न तो घुन या दीमक लगता है और न वह ऐंठती है । उमदा फ़रनीचर वग़ैरा तयार करने व खराद के काम में इस की लकड़ी बहुत काम आती है ।

इसकी छाल दवा के काम आती है और फूल से लाल और ज़र्द रंग निकलता है । इसकी पत्तियां और बीज मवेशियों का चारा है ।

इस पेड़ की एक मशहूर जाति शिमला पहाड़ की तरफ़ और भी होती है जिसका नाम सोनी, दाल, दौरी इत्यादि (Cedrela Serrata) है । इमारती काम व तख़ते वग़ैरा बनाने के काम के लिये इस की लकड़ी की मांग उस दयार में रहती है ।

Maize (मेज़)—मकई, जोन्हरी, भुट्टा । धान के बाद यह जिन्स दुनियां में सब से ज्यादा बोई जाती है । कहा जाता है कि यह अमेरिका से हिन्दुस्तान में लाई गई है । इसकी खेती हिन्दुस्तान में लगभग ६७८४२२४ एकड़ में होती है। अंगरेज़ी में 'इंडियन कार्न' (Indian Corn) के नाम से ज्यादा मशहूर है ।

इस के आटे से सत्तू बनता है और 'ग्लूकोज़' (Glucose) यानी शक्कर व नशास्ता निकाला जाता है जिस से शराब बनती है। शक्कर निकाल लेने के बाद जो खुद बचता है उस से 'नक़ली रबड़' बनाई जाती है। —इस के दाने से तेल भी निकाला जाता है जो खाने और बालने के अलावा साबून बनाने के काम भी आता है । इसके पत्ते और डंठल मवेशियों के चारे का काम देते हैं । इस की कुकड़ी और डंठल वग़ैरा से बंकनोट (Bank-note) नाम वाला काग़ज़ बनाया जा सकता है ।

अफ़सोस है कि इस की चलान का हिसाब अलग नहीं लिखा जाता बल्के मुतफ़रकात ग़ल्ले में लिख लिया जाता है।

Malabar grass (मालाबार ग्रास)—कोदीपुल्लू। यह मलाबार देश की भाषा का नाम है और घास भी वहीं होती है; इसे 'कोचीन ग्रास' (Cochin grass) भी कहते हैं। इसका अर्क़ खुशबूदार होता है और तेल 'जिंजर ग्रास आयल' (Ginger grass oil) कुफ़नरू पुल मलाबारी भाषा में कहलाता है। यह एक क़िस्म की (लेमन-ग्रास) (Lemon grass) घास है जो ट्रावंकोर में होती है।

Malacca Canes (मलक्का केन्ज़)—मलाका द्वीप की बेंत। बेंत के पौधे कई क़िस्म के होते हैं उनमें से यह भी एक क़िस्म है। इस बेंत में जितनी ही दूर दूर पर गांठ हों उतनी इसकी क़ीमत ज्यादा होती है। छड़ी बनाने के काम आती है। यह सुमात्रा द्वीप में बहुत पाई जाती है।

Malachite (म्यालचाइट)—यह एक क़िस्म का खनिज पदार्थ है जो पालिश देने पर बहुत सुन्दर हो जाता है और ज़ेवरात में 'जड़ने' या 'पच्चेकारी' के काम में लाया जाता है। साइबेरिया में बहुत मिलता है। नीले रंग के मालाचाईट को 'अज़्योर' (Azure) भी कहते हैं, इसका नीला रंग तांबे के अंश के कारण से होता है।

Malic acid (म्यालिक एसिड)—Apple देखो।

Malt (मॉल्ट)—जौ या दूसरे ग़ल्ले का खमीर जो चुआने के लिए उठाया या सड़ाया जाय। इस की शराब 'माल्ट लिकर' (Malt liquor) कहाती है। हिन्दुस्तान में यह शराब विदेश से बहुत आती है। आमदनी की तफ़सील:—

सन् १९०७-८ में ६१,३९,०००) की ४८८९००० गेलन
" १९१८-९ में ५८,५१,०००) की ४३०७००० "
" १९०९-१० में ५४,७३,०००) की ४१९४००० "

हिन्दुस्तान की आबकारी गुदामों में भी बहुत तयार की जाती है।

Mandiocca (मेण्डीओका)—Manioc देखो।

Mandarin Orange (मेण्डरिन आरंज)—पालमिरो देश की उमदा कागज़ी नारंगी।

Manganese [म्यांगनीज़]—मेंगनीज़, कोलसा का पत्थर, इंगनी, निजनी। काले रंग का धातुमय पदार्थ जिसका गुण लोहे से मिलता है। कांच बनाने मट्टी के बरतन पर काला रंग चढ़ाने और मीनाकारी के काम आता है। स्टील बनाने के लिए यह बड़े कांम की और ज़रूरी चीज़ है। ताम्बा, जर्मन सिलवर वग़ैरा कई धातुओं के मेल में भी यह मिलाया जाता है।

हिंदुस्तान मे पंचमहाल (बम्बई), झबुआ (सट्रल इंडिया), बालाघाट, भंडारा, छिंदवाड़ा और नागपूर (मध्य प्रदेश), गंजाम और विज़गापटम् (मद्रास) की खानों से अब यह बहुत निकाला जाने लगा है। यह कई क़िस्म का मिलता है जैसे 'सिलोमिलन' (Psilomelane)— इस में कई पदार्थ मिले रहते हैं। 'बाक्साइट' (Bauxite)— इस में रेत ज्यादा मिला रहता है और 'आक्ज़ाइड आफ़ मेगनीज़ या पाइरोलक्साइट' (Oxide of manganese or Pyroluxite)— (काले रंग का मगनीज़ पत्थर) याने संढ इस से निथार याने निखार का मसाला (Bleaching Powder) भी बनता है। इस देश में काले रंग की चूड़ियां इसी को कांच के साथ मिला कर बनाते हैं। Manganite, Manganese-spar, Manganese-blende, Hausmanite भी इस के धातु-मूल हैं। हिन्दुस्तान से यह बहुत चलान होता है और इस से 'फेरो-मेंगनीज़' (Ferro-Manganese) तयार किया जाता है जिस के मेल से नर्म स्टील बनता है। इस की मांग बढ़ती ही जाती है।

सन् १९०९—१० में ७९ लाख रुपए से ज्यादा का माल रवाना हुआ।

Mango (म्यांगो)—आम। यह हिन्दुस्तान का नामी फल है इस की बहुत क़िस्में हैं। इसकी लकड़ी बहुत ज्यादा काम में लाई जाती है। इस पेड़ की पत्ती मवेशियों को खिलाई जाती है जब कि उन के मूत से

पिउड़ी (Indian yellow) नाम का पीला रंग तयार किया जाता है।

योरोप में केवल इस के अचार और चटनी भेजे जाते हैं पर फल बहुत कम जाता है अलबत्ता इस देश में इस का व्यापार बहुत ज्यादा होता है।

बनारस का लंगड़ा, लखनऊ का सफेदा, मुज़फ़्फ़रपूर का मालदह वग़ैरा और भी कई तरह के आम मशहूर और बड़े स्वादिष्ट होते हैं। आम की सैकड़ों क़िस्म व नाम हैं। आम को सुखा कर खाने के मसाले व चटनी बनाने के लिए अमचूर तयार किया जाता है जो बारहों महीने बिकता है।

Mangosteen (मंगोस्तीन)—मंगोस्तीन, मुस्तः। यह मलाका टापू का मशहूर मेवा है। हिन्दुस्तान में इस के लगाने की कोशिश की गई थी मगर कामयाबी नहीं हुई। यह मेवा दूर दूर जाता है। इस के छिलके में कसाव (Tanning) बहुत रहता है।

Mangrove, White (व्हाइट म्यांग्रोव)—बीना, बनी, मद, बेंकन्दन। यह पेड़ बम्हा में होता है। इस की छाल में कसाव (Tanning) का अंश बहुत है। इस की राख खार है और कपड़ा धोने के काम आती है। इस का फल मक्खन के साथ उबाल कर बदन के छाले या छोटी सीतला के दाने पर मलने से जलन कम हो जाती है। इस की लकड़ी फट जाती है इस लिए जलाने के सिवाय और किसी काम की नहीं होती। कसाव के लिए इस की छाल बहुत काम आती है।

इस की दूसरी जाति सौथ अमेरिका में होती है जो कसाव और रंग निकालने के लिए इंगलैंड में बहुत रवाना होती है।

Manifold Writing Paper (मेनीफ़ोल्ड राइटिंग पेपर)—ऐसा काग़ज़ जिसकी सहायता से एक पर लिखने से कई नक़लें एक ही समय में लिखी जा सकें। इसके लिए बारीक सफ़ेद काग़ज़ लिखने के लिये रहता है और दूसरा स्याह काग़ज़ जिसकी सहायता से कि कई नक़लें

तयार हो जाती हैं नीचे लिखे मसाले से तयार किया जाता है। चरबी में काजल या 'मुर्दासीसा' (Plumbago), जिससे पेंसिल बनती है, या 'प्रूशियन ब्लू' (Prussian Blue) रंग मिलाकर काग़ज़ पर लेप दिया जाता है और २४ घंटे के बाद एक चिकनी लकड़ी की कछनी से काछकर सुखा लिया जाता है। सफ़ेद काग़ज़ के नीचे यही स्याह मसाले वाला काग़ज़ रखकर लिखने से कई नक़लें उतर आती हैं।

Manilla Hemp (म्यनीला हेम्प)—मनीला का रेशा, मनीला सन। इसका पौधा अब हिन्दुस्तान में भी लगाया जाने लगा है इसके रेशे बड़े अच्छे होते हैं। इस के रेशों से मज़बूत रस्से बनते हैं और पुराने रद्दी रस्सों से उमदा काग़ज़ तयार होते हैं। इसकी लाखों गांठ विलायत जाती हैं। फ़िलिपाइन टापू के रहने वाले इसके पेड़ और इसकी छाल को 'अबाका' (Abaca) कहते हैं।

Manillas (मनीलाज़)—फ़िलीपाइन टापू के बने हुए सिगार और सिगरट को कहते हैं।

Manioc (मेनिओक)—मारचीनी, मरवल, सिमला आलू। यह 'कसावा' (Cassava), 'टेपिओका' (Tapioca) या 'मेंडिओका' (Mandioca) भी कहलाता है। यह पौधा Manihot Utilissima अब कई जगह हिन्दुस्तान में बोआ जाने लगा है। यह ऐसा पौधा है जो सदा हरा रहता है इसकी डाली काट कर लगाने से ही लग जाती है। इस की जड़ के गूदों का पानी ज़हरीला होता है। गार कर सुखा लेने से जो आटा या दाना निकलता है वह खाने के काम आता है। इसी के जड़ के आटे को 'ब्राज़िलियन आरारूट' (Brazilian Arrowroot) कहते हैं और इसी का भूना हुआ सतू 'टापिओका' (Tapioca) कहाता है। इस की जड़ मीठी और कडुई दो तरह की होती है। कडुए क़िस्म की जड़ का रस उबाल लेने पर 'कसारीप' (Cassareep) कहाती है जो इस बात के लिए मशहूर है कि मांस इत्यादि पर डाल देने से वह बहुत दिनों तक नहीं सड़ता। Tapioca भी देखो।

Manna (मन्ना)—तबाशीर, वंसरोचन। बाज़ार में दो तरह का वंसरोचन मिलता है [१] कबूदी याने नीलवर्ण का और [२] सफ़ेद। यह कई क़िस्म के बांस में से निकलता है। वैद्यक और तबाबत में यह बतौर दवा अक्सर इस्तेमाल होता है।

'म्यन्ना' शब्द अंगरेज़ी में तबाशीर के अलावा चंद ऐसे मीठे रस के लिये भी इस्तेमाल होता है जो १३ या १४ क़िस्म के वृक्षों में पाया जाता है इस रस को कीड़े या मक्खियां बनाती हैं। यह रस ज्यादातर अंगरेज़ी दवा में शक्कर की जगह मिठास पैदा करने के लिए बहुत इस्तेमाल होते हैं। शहद की गिनती भी इसी में है॥

Manure (म्यन्योर)—खाद, पांस। अब कई तरह की बनावटी खाद बना कर काम में लाई जाती है और इस का व्यापार होता है। मवेशियों के गोबर और मूत बहुत अच्छी खाद होती हैं, खली भी उमदा खाद है।

लोह-धातु-मूल में से गंधक का अंश पृथक करती समय जो लोह-कीट (Slag) निकलती है उस में से भी उत्तम खाद निकाली जाने लगी है। खाद तीन प्रकार की होती है एक 'जान्तविक' जैसे गोबर, हड्डी इत्यादि, (२) 'औद्भिज' जैसे वासक की पत्तियां वग़ैरा व खली वग़ैरा और (३) 'खनिज' जैसे शोरा, पोटाश वग़ैरा। इन के अलावा गोआनो, हड्डी की खाद, सूपरफ़ासफ़ेट, नाइट्रेट आफ़ सोडा (एक प्रकार का शोरा), पोटाश की खार, सलफ़ेट आफ़ अमोनिया इत्यादि कई बनावटी खाद अब बहुत इस्तेमाल की जाने लगी हैं। इन खादों का अच्छा व्यापार विदेशों में होता है। पर इस देश में इन बनावटी खादों के फ़ायदे से लोग कम वाक़िफ़ हैं।

हिन्दुस्तान से खाद के काम के पदार्थ खास कर हड्डी बहुत चलान होती है सन १९०४-५ में ४३,७७,८४१ रु० की खाद रवाना हुई जिस में ३७,५१,४८०) की हड्डी का चूर सिर्फ़ खाद के लिये भेजा गया। सन १९०६-७ में १,०१,५४,८९२) की खाद की चीज़ें गईं जिन में ५५,४५,२४१ रु० का हड्डी का चूर था। सन १९०९-१० में ५३.६९

लाख रुपये की सिर्फ़ हड्डी की खाद और ८३ लाख रुपये की खली और ६९ लाख के सींग व उस के चूर रवाना हुये थे।

Marble (मार्बल) -संगमरमर। चूने के ऐसे पत्थर जो पालिश करने पर खूब चिकने होकर चमक उठें, 'मारबल' कहलाते हैं। इन रंगीन पत्थरों की बनावट अति प्राचीन समय के समुद्र के छोटे छोटे घोंघे वा कौड़ियों के चूर से है जो समय पाकर सब सख्त और एक मेल हो गये हैं। यह पत्थर फूकने पर चूना होजाता है। हिन्दुस्तान के सब प्रकार के संगमर्मर का वर्णन Limestone के ब्यान (पृष्ठ २०९) में किया गया है। विलायती संगमरमर भी कई तरह के होते हैं जिन में से खास खास यह हैं:—(१) 'रोसो एंटीको' (Rosso antico)—यह गहरा सुर्ख़ खून की तरह लाल भभूका होता है और उस पर सफ़ेद सफ़ेद बुन्दकियां या दाग़ रहते हैं इसे 'चुनरी का संगमरमर' कदाचित कहते हैं, यह 'लिबिया' (Libya) में मिलता है। (२) 'ग्यालो एंटीको' (Giallo antico)—यह ज़र्द रंग का होता है और उस पर स्याह छल्ले या गुल पड़े रहते हैं, इसे 'चीता' या 'चितला' संगमरमर कहें तो क्या बेजा है, यह 'मिलॉस' (Milos) मे पाया जाता है। (३) 'ब्रोक्याटिलो' (Brocatello)—यह भी ज़र्द रंग का संगमरमर है जिस पर लाल डोरियां या धारियां होती है, यह 'शिमला' (Simla) पहाड़ में मिलता है। (४) 'पोर्टर' (Portor)—यह काला संगमरमर होता है जिस पर ज़र्द नस होती है, यह 'जेनवा' (Genoa) से आता है। (५) 'प्यारागोन' (Paragone)—यह नफ़ीस स्याह पत्थर बर्गमो (Bergamo) से आता है। संगमरमर से नफ़ीस मूर्तियां, खिलौने, आरायशी पत्थर की चीज़ें व इमारतें बनाई जाती हैं। इस देश का निकाला हुआ संगमरमर कितना बिकता है इस का ब्योरा नहीं मालूम हो सकता पर रेल द्वारा लगभग ६५ और ७० लाख हंडरवेट के दर्म्यान रवाना हुआ करता है और लगभग ३ या ४ लाख रुपये की मालियत का विदेशों में भी जाता है। इंगलंड, बेलजियम, फ्रांस व जरमनी से कई तरह के विलायती संगमरमर यहां भी आते हैं। सन १९०६-७ में ३०,८७,४८४ रुपये के संगमरमर आये थे।

(१) संगमरमर साफ़ करने का मसाला— साबुन का टीप खूब तीखा बना कर उस में बिना बूझा चूना मिला कर दूध सा गाढ़ा कर ले और मैले संगमरमर पर पोत कर २४ घंटे तक छोड़ दे फिर कपड़े से पोंछ ले, पत्थर साफ़ हो जायगा।

(२) संगमरमर का सीमेंट—प्लास्टर आफ़ पेरिस को फिटकरी के गाढ़े पानी में तर करे और भट्ठे में पका ले। इसे पीस लेवे। जब कोई संगमरमर की चीज़ जोड़ना हो तो उसे पानी से सान कर जोड़े यह सूख कर निहायत कड़ा हो जायगा और इस पर पालिश भी हो सकेगी। और रंग मिला कर उसे रंगीन भी बना सकते हैं।

(३) नक़ली लाल संगमरमर बनाने की तरकीब—४० सेर बालू, २० सेर पोटाश, ५ सेर चूना, १ सेर नमक, ½ सेर शोरा और ४ तोला संखिया सफ़ेद लेकर इन्हें गलावे और तब उस में १२½ सेर 'कापर सब-अक्साइड' (Copper Suboxide) और ½ सेर शोरा मिला कर ढाल ले।

Marble paper (मार्बल-पेपर)—अबरी, अबरीदार काग़ज़। काग़ज़ पर रंगों से नसें या गुल बनाकर अबरी बनाई जाती है जो जिल्दों की दफ्तियों पर मढ़ी जाती है। अबरी का रंग रंगने को 'मार्बलिंग' (Marbling) कहते हैं।

Margarine (मार्जरीन)-बनावटी मक्खन। इसे 'ओलीयोमार्गरीन' (Oleo-margarine) भी कहते हैं। इस के बारे में ज्यादा हाल Butter में देखो।

Marking Ink (मार्किंग इंक)—Ink देखो।

Marking nut (मार्किंग नट)—भिलावां, भेला। यह पेड़ हिमालय की तराई में होता है। वैद्यक दवा में बहुत इस्तेमाल होता है। बंगाल में इस से कपड़े रंगे जाते हैं। कपड़े पर निशान करने की स्याही इसके फल के रस या गूदे से अच्छी बनती है मगर कपड़े को चूने के पानी से तर कर लेना चाहिये। इसके पेड़ से एक प्रकार का रस पछना लगाने पर निकलता है, उससे वारनिश बनती है।

Marmalade (मारमलेड)—नारंगी याँ अनानास वग़ैरा के छिलकों को शरबत के साथ औंटाकर मुलायम करते हैं फिर उन्हें उसी के रसके साथ उबालकर लबसी की तरह बना लेते हैं। इसकी बहुत खपत होती है। बेल से बहुत अच्छा मारमलेड तयार होता है। यह एक तरह की मिठाई है।

Marten (मार्टेन)—एक क़िस्म का पशु जो न्यूले की जाति का होता है, इसकी पोस्तीन की क़दर की जाती है। उत्तरीय अमेरिका से लगभग १ लाख पोस्तीन इंगलेंड में जाती है। यह पशु हिन्दुस्तान में भी होता है।

Marmar (मर्मर)—संगमरमर। Limestone और Marble देखो।

Marmelle Oil (मारमेल आयल]—बेल का इत्र। बेल के छिलके से डच लोग सिलोन में इत्र निकालते थे। इसके फूल से भी इत्र चुआया जाता है।

Mascadine [मस्केडाइन]—सफ़ेद अंगूर।

Massicat, Massicit—Litharge देखो।

Mastic, Mastich, Mastix [म्यास्टिक]—रुमीमस्तगी, रुमीमस्तकी, कुंदररुमी। यह कई क़िस्म के पेड़ की राल है [१] पहिली क़िस्म [Pistacea Lentiscus] है और यही असल रूमीमिस्तकी का पेड़ है जो मेडिटेरेनियन के प्रान्तों में बहुत होता है इसकी राल हिन्दुस्तान में बहुत आती है। [२] दूसरी क़िस्म P. Mustica है जिसे ग्वान या खंजाक कहते हैं और इसकी राल को 'मस्तिकी, कुंजद' वग़ैरा कहते हैं और बिलोचिस्तान में बहुत होता है।

मस्तगी मामूली वारनिश या नक़शे, तसवीर वग़ैरा की वारनिश बनाने के लिए काम में आती है। दांत के मंजन में यह बहुत दी जाती है और फ़ायदा करती है। दवा में भी इस्तेमाल की जाती है।

Mast wood (मास्ट उड)— सुलतान चम्पा।

Matches (म्याचेज़)—दियासलाई। दियासलाई तीन तरह की होती है

(१) गंधक की 'दियासलाई' (Sulphur matches)।

(२) 'सेफ़टी म्याचेज़' (Safety matches)।

(३) 'रंगीन दियासलाइयां' (Pyrotechnic matches)।

इन के तयार करने की अब निहायत उमदा उमदा मशीनें तयार हो गई हैं और उन्हीं द्वारा यह बनाई जाती हैं। इस की तीलियां ज्यादातर 'व्हीट मार' (White pine) की लकड़ी से तयार की जाती है लेकिन हिन्दुस्तान में ५९ क़िस्म की लकड़ियां ऐसी पाई गई हैं जिनसे तीलियां या डिबियां तयार हो सकती हैं। तीलियों के सिरे पर जलनेवाला मसाला और डिबियों के एक पहलू पर रगड़ से बाल देने वाला मसाला लगा रहता है। उक्त तीनों तरह की दियासलाइयों के मसाले जुदे जुदे हैं। स्वीडन (Sweden) और नारवे (Norway) देश में इस के कारखाने अधिक हैं अब और देशों में भी इस के कारखाने हो गए हैं। हिन्दुस्तान में ७,४५,००० रुपए की सन् १९०८-९ में और ८१,५५,००० रुपए की और सन् १९०९-१० में विदेशों से दियासलाई आई। हिन्दुस्तान में भी अब कई कारखाने जारी हो गए हैं, सन् १९०८ में ४ और १९०९ में ५ फ़ैक्टरियां थीं।

इस विषय पर Mr. R. S. Troup, Imperial Forest Economist to Government of India, ने बहुतही अच्छी किताब 'The Prospect of Match Iudustry in the Indian Empire' नाम की लिखी है जो दियासलाई की फ़ैक्टरी करने वाले को ज़रूर पढ़ना चाहिए। उस में दियासलाई के जो नुसखे दिये हैं वे यहां नक़ल कर दिये जाते हैं:—

(१) गंधक की दियासलाई।

[क].

यलो फ़ास्फ़रस	५·५ भाग	मिनियम *	५·० भाग
कतीरा (Gum Tragacanth)	३·० भाग	नाइटिक एसिड *	
काजल (Lamp-black)	०·३ भाग	[४ डि० Baume]	२·० ,,

* इन दोनों को मिलाकर और सुखा कर काम मे लावें।

[ख]

यलो फ़ास्फ़रस	३ भाग	पर आक्साइड आफ़ लेड [Peroxide of lead]	२ भाग
कतीरा	३ ,,	बारीक़ साफ़ बालू और स्माल्ट [Fine sand and smalt]	२ ,,

(२) सेफ्टी म्याच।

(क)

पोटाशियम क्लोरेट	[Potassium chlorate]	५ भाग
,, बाइक्रोमेट	[,, bichromate]	२ ,,
कांच की चूरा	[Powdered glass]	६ ,,
गोंद		२ ,,

यह विना चिड़चिड़ाहट के बलेगी

[ख]

पोटाशियम क्लोरेट (Potassium chlorate)	५३·८ भाग
बेरियम क्रोमेट (Barium chromate)	२१·६ ,,
गंधक *	२·३ ,,
कांच का चूरा	४·० ,,
गोंद	१२·८ ,,

* यह उस दियासलाई में मिलाना होता है जो हवा में जलाने के लिए बनती है।

(३) मसाला जिस पर सलाई रगड़ी जाती है।

सलफ्यूरेट आफ़ अंटीमनी (Sulphurate of antimony)	५ भाग
रेड फ़ास्फ़रस (Red Phosphorus)	३ ,,
पर-अक्साइड आफ़ मंगनीज़ (Peroxide of Manganese)	१½ ,,
जिलेटीन (Gelatin)	४ ,,

बलने वाली असल चीज़ पोटाशियम क्लोरेट है जो ४० से ९२ फ़ी सदी तक मिलायी जाती है मगर आम तौर से ५० फ़ी सदी से ज्यादा ही मिलाना चाहिए। क्लोरेट बहुत साफ़ होना चाहिए और

अलग ही खल में पीसना ज़रूरी है। क्लोरेट में थोड़ा अलकोहल मिलाकर अन्य मसालों में बड़ी इहतियात और आहिस्तगी से मिलावे नहीं तो भभक उठने का डर रहता है।

Mats, Matting [म्याट्स, म्याटिंग]–चटाई, टाट। कई क़िस्म की सूखी घास, रेशे या तीलियों से बिछाने के लिए जो फ़र्श बनाया जाता है उसे चटाई या टाट कहते हैं। हिन्दुस्तान में पालाघाट और गंजाम, मीदनापुर और कलकत्ते की सीतलपाटी, सिलहट की नारियल की जटा की चटाई, बंगाल और दक्खिन की मूंज की चटाई, इलाहाबाद, आगरा, और दिल्ली की खजूर वग़ैरा की चटाइयां जो बंबई में शैल कहाती हैं व दक्खिन की हाथीदांत की तीलियों की चटाई बहुत मशहूर हैं।

हिन्दुस्तान में चटाई बनाने के लिए हाथीचिंघाड़, मूंज, बांस, बेंत, सीतलपाटी, नारियल की जटा, सन, मुदरकटी [Cypress tegetam] कपूर कचरी की पत्तियां, बोल [Hibiscus tiliaceus], बनिया या चेलवा, मंजरी [Namorhops Retahiana], गोलफल [Nipa fruticans], केतकी [P. Odoratissium], दाम्बू [Phragmites], सरकंडा, नकरट, पटेर [Typha elephantina], पुआल वग़ैरा और भी कई चीज़ें इस्तेमाल होती हैं।

May apple [मे एप्ल]—Podophyllin देखो।

Meat Extract (मीट एक्सट्रैक्ट)—मांस का अर्क़, यख़नी। इसका व्यापार आजकल योरोप में बढ़ रहा है।

Meconeum [मेकोनियम]—पोस्ते का सत्त।

Midoc [मिडाक]—एक क़िसिम की 'क्लोरेट' शराब। बोरडो से बनकर आती है।

Meerschaum (मीरशॉम)—यह एक क़िस्म का नर्म खनिज पदार्थ है जिसके रेज़े [कण] बहुत बारीक होते हैं, यह सफ़ेद ज़र्दी या सुर्ख़ी मायल होता है, इसे 'सेपियोलाइट' [Sepiolite] कदाचित चिकनी खड़िया भी कहते हैं। इमारती काम, तम्बाकू पीने का पाइप [Pipes]

बनाने के काम बहुत आती है । फ्रांस के बने हुए 'मीरशॉम पाइप' (Meerschaum pipes) बहुत उमदा और सुन्दर होते हैं ।

[१] मीरशाम का सीमेंट—लहसुन को कूट पीस कर लुबदी बना लो और मीरशाम की चीज़ जहां से जोड़ना हो वहां पर थोड़ा सा अन्दाज़ से लगा दो और दोनों टुकड़े जोड़कर तार से बांध दो और दूध में डालकर लगभग आधा घंटा उंबालो ।

(२) बिन बूझा चूना लेकर अंडे की सफ़ेदी और क्रीम (दुग्ध-सार) में सान लो । इस मसाले से चीनी बरतन या कांच की चीज़ें भी जोड़ी जा सकती हैं ।

Megrass (मेग्रास)—चोटों, जूसी, शीरा, चीनी की मैल ।

Melon, Castor-oil (क्यास्टर-आयल-मेलन)—पपिया, पपीता । यह हज़म करने वाला फल है । जो मांस जल्दी न गलनेवाला हो वह इस रस या पत्तो के साथ उबालने पर जल्द गल कर नर्म हो जाता है । इस से 'पपैन' (Papain) नाम की हाज़िम दवा योरोप में तयार होती है । इस के फल का रस टसर नर्म करने के लिये अब इस्तेमाल होने लगा है । यह फल खाया भी बहुत जाता है ।

Melon, Musk (मुश्क मेलन)
,, Pumpkin (पम्पकिन मेलन) } सफ़री कोंहा, मीठा कद्दू। इसी की एक छोटी जाति होती है जो टेंड़ या टिंड़ कहाती है । इन की तरकारी बना कर खाई जाती है।

Melon, Sweet (स्वीट मेलन)—खरबूज़ा । अफ़ग़ानिस्तान का खर्बूज़ा बहुत उमदा होता है और देर तक ठहरता है उसे 'सरदा' या सर्दा खरबूज़ा कहते हैं । हिन्दुस्तान में भी मामूली खरबूज़ा बोआ जाता है और बहुत खाया जाता है । लखनऊ व आगरे का खरबूज़ा ज़्यादा मीठा होता है और दूर दूर जाता है । इस के बीज सरदई या ठंडई में तरावत लाने की गरज़ से पीये जाते हैं । बीज में से खाने लायक़ तेल भी निकाला जा सकता है । उन में ३० फ़ी सदी तेल रहता है ऐसा Vemler साहब लिखते हैं ।

Melon, Water (वाटर मेलन)—तरबूज़। हिन्दुस्तान में यह भी बहुत खाया जाता है। इस के बीज दवा में इस्तेमाल होते हैं और उन से तेल निकाल कर खाया व बोया जाता है।

Melton (मेल्टन)—एक क़िस्म की बानात।

Menthol (मेन्थोल)—पीपरमिंट आयल में से एक क़िस्म का कपूर निकलता है। दांत व सिर वग़ैरा के दर्द की अच्छी दवा है, जहां रगड़ा जाता है वहां ठंडक सी पड़ जाती है। पिपरमिंट ठंडे में ज़्यादा दिन तक पड़े रहने से गाद जम जाती है।

Mercury (मर्क्युरी)—पारद, पारा। इसे 'क्विक सिलवर' (Quicksilver) भी कहते हैं। यह एक द्रव धातु है। पारा स्वयंस् बहुत कम मिलता है। जो बाज़ार में मिलता है वह सब धातु-मूल 'शिंगरफ़' (Sulphide of Mercury) या (Cinnabar) से ज़्यादातर निकाला जाता है। पहिले शिंगरफ़ स्पेन देश के Almaden स्थान और इटली से प्राचीन काल में लाया जाता था मगर अब 'क्यालीफ़ोरनिया' (California) में बहुत निकलता है। और इटली, आस्ट्रिया-हंगरी, इड्रिया, रूस, चीन और पीरू में भी निकलता है। शिंगरफ़ लाल रंग का चमकदार ठस खनिज पदार्थ है और जब जलाया जाता है तब उस का गंधक तो जल जाता है और पारा उड़ कर बरतन के ऊपर या ढकने में जम जाता है। यह पारा साफ़ करने पर चांदी की तरह सफ़ेद चमकता हुआ द्रव होता है। यह कई दूसरे धातुओं के साथ जल्द मिल जाता है [इस मिश्रण को अंगरेज़ी में 'अमलगम' (amalgam) कहते हैं], इस लिए सोना या चांदी को खान में से निकालने के लिए भी यह काम में लाया जाता है क्योंकि सोना और चांदी को यह खा लेता है और मैल को छोड़ देता है, फिर पारा उड़ा कर वे अलग कर लिये जाते हैं। पारा ६७५ डिगरी की आंच में उबलने लगता है और भाप रूप होकर उड़ जाता है और ४० डिगरी पर जम जाता है। यह साफ़ पानी से १३·६ गुना भारी है। पारे से गरमी सर्दी जानने का उपयन्त्र 'शीतोष्णमापक' (Thermameter) और 'वायूभारमापक' (Barometer) यंत्र बनते हैं, आईने पर इस

की क़लई की जाती है और दवा वग़ैरा में बहुत काम का पदार्थ है। इसी से 'इंगुर' (Vermilion) बनता है। संक्षेप यह कि यह बड़े काम आता है। इस के क्षार रसकपूर 'मूरियेट आफ़ मर्क्युरी' (Muriate of Mercury), 'सलफ़ेट आफ़ मर्क्युरी' (Sulphate of Mercury), 'सब-क्लोराइड आफ़ मर्क्युरी' (Sub-chlorade of Mercury), कृष्णभस्म (Suboxide of Mercury), रसकपूर (Perchloride of Mercury) इत्यादि हैं।

यह कहा जा चुका है कि पारा ज्यादातर शिंगरफ़ में से अलग करके निकाला जाता है। पारा निकालने में शिंगरफ़ का कुछ गंधक बिना जले रह जाता है और उस के साथ जो पारे के कण रह जाते हैं उसे कजली [Soot] कहते हैं। जब इस के धातु-मूल में लवण या खार का अंश रहता है या आंच काफ़ी नहीं लगती कि पूरी तरह से पारा अलग होजाय तो 'रसकपूर' [Calomel] बन जाता है।

बाज़ार का पारा शुद्ध नहीं मिलता उस में सीसा या जस्ता व बिस्मथ का अंश मिला रहता है, इस की पहचान यह है कि जब पारा स्वच्छ कांच पर डाल कर ढलकाया जाय तब कांच पर मैली लीक [धारी] पड़ी देखाई देगी इसे अंगरेज़ी में 'टेल' [Tail] कहते हैं। इसे साफ़ करने की सहज रीति यह है कि पारे को शक्कर के साथ मिला कर हवा में खुला रख दें। भूरी भूरी मैल पारे से अलग हो जायगी इसे साफ़ मोटे कपड़े से छान लें अथवा मट्टी की चौड़ी रकेबी में पारा फैला कर [मोटी तह न हो] उस में शोरे का तेज़ाब डाल दें दिन भर बाद पारे में साफ़ पानी डाल डाल कर धो डालें।

वैद्यक शास्त्र में पारे की कई अच्छी अच्छी दवायें तयार की जाती हैं जैसे रस परपटी, हिंगुलेश्वर, पीत भस्म, रक्त भस्म, राजमृगांक रस, रसेन्द्र गुटिका, रस सिंदूर इत्यादि।

सन् १९०९-१० में ३·५६ लाख रुपये का पारा हिन्दुस्तान में आया।

Merino (मेरीनो)—मलीना। एक प्रकार का ऊनी कपड़ा जो 'मेरिनो' नामक भेड़ के ऊन से बनता है। मेरिनो नामक एक क़िस्म की भेड़ स्पेन देश में होती है। इनके ऊन मशहूर हैं। अब यह भेड़ अस्ट्रेलिया

और अमेरिका में भी बहुत होने लगी हैं। हिन्दुस्तान में इनकी नस्ल क्यों न बढ़ाइ जाय यहां तो हर क़िस्म का मौसिम होता है। इस भेड़ के उमदा ऊनकी तिजारत बहुत होती है।

Metals (मेटल्ज़)—धातु, धात। सोना, चांदी, लोहा, ताम्बा, जस्ता, सीसा, प्लाटिनम इत्यादि धातु वर्ग में हैं। यह सब खनिज पदार्थ हैं। मट्टी इत्यादि जिन जिन द्रव्यों में यह अधिक पाये जाते हैं उन्हें उपरस, या धातु-मूल (Ores) कहते हैं। इन सबका बहुत बड़ा व्यापार तमाम दुनिया में होता है। प्रत्येक धातु का वर्णन अलग अलग लिखा गया है। धातुओं में सबसे ज्यादा काम में आनेवाला धातु इस समय लोहा है और क़ीमती धातु सोना।

केवल हिन्दुस्तान में हर प्रकार के धातु लगभग १३ करोड़ के सालाना आते हैं इनके अलावा धातु की बनी चीज़ें लगभग पौने तीन करोड़ से ज्यादा की आती हैं। इन अंकों में सोना चांदी शामिल नहीं है, अगर इन्हें भी शामिल किया जाय तो ३७ करोड़ रुपये की मालयत और जोड़ देनी चाहियें। हिन्दुस्तान से भी धातु बाहर जाते हैं खास करके सोना, सीसा, लोहा, रांगा और क्रोमाइट, मेगनीज़ वग़ैरा। सीसा खास ज्यादा तर बर्म्हा से जाता है।

नुसखा—धात साफ करने का—२ औंस तूतिया और ½ औंस सब-कारबोनेट आफ़ पोटाश (Sub Carbonate of Potash) इन दोनों को मिलाकर मिट्टी की घरिया में पाव घंटे तक आग में फूंक दे। भस्म को तेल से तर कपड़े में लगाकर धात पर रगड़ रगड़ कर उसे साफ़ करले और साफ़ कपड़े से पोंछ दे।

Methylated Spirits (मेथिलेटेड स्पिरिट)—अलकोहल में लकड़ी का मद्यसार या नफ़था (Wood Naphtha) मिला देने से वह पीने लायक़ नहीं रहती, क्योंकि यह बिलकुल बदज़ायक़ा और बदबूदार हो जाती है। इस पर सरकारी महसूल इसीलिए कम लगता है कि यह पीने लायक़ नहीं रहती और हुनर के काम में बहुत लाई जाती है। हिन्दुस्तान में इसका कारखाना ज़रूर जारी होना चाहिये और इससे वारनिश यहीं तयार की जानी चाहिए, क्योंकि लाह हिन्दुस्तान

छोड़कर और कहीं नहीं होती । 'मीथिलेटेड स्पिरिट' की यहां बहुत खपत होने लगी है । यह बाला भी जाता है ।

Mica (माइका)—अबरक, वज्राभ्र । इस 'मस्कोवाइट' (Muscovite) भी कहते हैं । यह कई तरह का होता है । कारनवाल, स्वीडन व नारवे युनाइटेड स्टेट और साइबीरिया में बहुत पाया जाता है । हिन्दुस्तान में भी बहुत मिलता है, खासकर सूबा बंगाल, मद्रास, बम्बई और बर्म्हा में इसकी कई खान (हजारीबाग़, खड़गडीहा वग़ैरा में) हैं। लेकिन बंगाल और मद्रास की खानों से ज्यादा निकाला जाता है । इसके पत्तर कांच की तरह से पारदर्शक होते हैं । अबरक आंच में जलता नहीं और न चटकता है, बिजली का असर भी इस पर नहीं फैलता, आंच को पार नहीं होने देता, हलका होता है यह सब गुण ऐसे हैं जिससे उसकी बहुत क़दर की जाती है, खास करके बिजली के कारखानों में इसका बहुत इस्तेमाल होता है । लम्प की चिमनी व लालटेन, अंगरेज़ी चुल्हों में लगाया जाता है। ग्रामोफ़ोन का 'साउण्डिग बाक्स' (Sounding box) में यह लगाया जाता है, और भी बहुत काम में आता है । इसका खूब बारीक चूरा तेल में मिलाकर उमदा 'लुब्रीकण्ट' बनता है। अबरक का पतला परत या चूर जोड़कर 'माइकेनाइट' (Micanite) तयार होता है इस तरकीब के निकलने से रद्दी अबरक भी काम में आने लग गया है । काला अबरक Biotite कहाता है, इसकी दूसरी क़िस्में (Muscovite, lepidolite aud lepidomelane) कहाती हैं।

जिस अब्रक में से पर के से टुकड़े निकलते हैं उसे अंगरेज़ी में 'प्लुमोज़ माइका' (Plumose mica) और जिस में वर्क वर्क निकलते हैं उसे 'प्रिस्मेटिक माइका' (Prismatic mica) कहते हैं । इसके वर्क इतने पतले निकाले जा सकते हैं कि १ इंच में २५,००० वर्क आजायं । अब्रक की दो क़िस्में मानी गई हैं [१] वह जिस में सिलिकेट आफ़ अलूमिना और खार का अंश ज्यादा पाया जाय यह 'मस्कोवाइट' (Muscovite) और 'लेपीडोलाइट' (lepidolite or lithia mica) कहाते हैं, यही बाजार में ज्यादा पाया जाता है और (२) जिसमें सिलिकेट आफ़ मेगनीशिया का अंश अधिक रहता है वह

[phlogophite or rhombic mica) और biolite कहाता है यह भी ज़्यादा काम में लाया जाता है। Muscovite और phlogophite क़िस्म के ही अब्रक ज़्यादा काम में आते हैं। इसके जितने बड़े बड़े वर्क़ निकलें उतनी ही क़ीमत बढ़ जाती है। तिजारती काम के लिए $2\frac{1}{2}\times4\frac{1}{2}$ इंची के वर्क़ बेकाम या कम क़ीमती गिने जाते हैं और इससे बड़े वर्क़ ही काम के होते हैं।

हिन्दुस्तान में इनके छोटे बड़े टुकड़ों को (१) सझला [२] मझला [३] रासी (४) कड़ा (५) अर्धा [६] फेल्धा [७) वर्का और [८] अदमला कहते हैं। इन नामों के लिए कोई ख़ास बंधी नाप नहीं है तौभी अन्दाज़न जो जो नाप मानी जाती है उसका ब्योरा यह है:—

संझला	५ × ४	इंच	या ४ × ३	इंच
मंझला	७ × ५	”	या ५ × ४	”
रासी	९ × ६	”	या ६ × ५	”
कड़ा	१२ × ९	”	या ८ × ६	”

अर्धा और अदमला अब्रक उमदा खानों में से ही निकलते हैं। बड़े से बड़े वर्क़ १९×१४ इंच या २०×१७ इंच तक के निकलते हैं। खानों के पास बोझ के हिसाब से दाम लगाया जाता है। एक बोझ ६ पंसेरी का गिना जाता है मगर सेर की तौल छोटी है यानें लगभग २२½ पक्के सेर की पसेरी होती है और ≡) से ९) तक फ़ी पसेरी का दाम लगता है।

अभ्रक के भस्म वैद्यक दवा के काम आते हैं और काला अभ्रक ही ज़्यादा पसंद किया जाता है, जिसे बज्राभ्र या कृष्णाभ्र कहते हैं। इस के महीन चूर धान्याभ्र कहाते हैं। इस के मशहूर रस अग्निकुमार रस, अर्जुनाभ्र, सुलोचनामृताभ्रम् इत्यादि हैं।

हिन्दुस्तान में १५७२३ आदमी औसतन सन् १९०६ में इस की खान में काम करते थे। सन् १९०५-६ में २३२४४१३) का और सन् १९०६-७ में ३८२४९८८) का अबरक हिन्दुस्तान से चलान हुआ और सन् १९०९-१० में लगभग २३२५००० रु० का ३३९६३ हंडरवेट, इस साल

इस का भाव ५ रु० सैकड़ा कम हो गया था। इस की रवानगी में कमी होती दिखाई देती है हालांकि इस की ज़रूरत एलेक्ट्रिकल काम में बढ़ रही है।

Milk (मिल्क)—दूध, दुग्ध। इस देश में गाय और भैंस का दूध बहुत इस्तेमाल होता है। दूध से दही, मठ्ठा, मक्खन, पनीर, खोआ और घी वग़ैरा तयार होकर बहुत बिकता है। बकरी, भेड़, ऊंट, गदही इत्यादि के दूध भी इस्तेमाल होते हैं मगर कम। दूध वास्तव में अमृत तुल्य भोज्य पदार्थ है।

'कंडंस्ड मिल्क' (Condensed Milk) याने गाढ़ा किया हुआ कृतरक्षित दूध तयार करने की तरकीब यह है कि दूध को धीमी आंच पर उबाल कर उसका पतला खोआ बना ले और फिर टीन के डब्बे में गरम गरम डाल कर उसे ऐसा बन्द कर दे कि हवा न घुस सके इस तरकीब से वह बहुत दिनों तक रह सकता है खट्टा न होगा। इसी तरह वह दूर दूर भेजा जा सकता है। बम्बई में इस का एक कारखाना भी खुला है यह बड़े फ़ायदे का रोज़गार है। इस देश में कुल दो बड़े डेयरी फ़ार्म है हालांकि यह शहर शहर में होने चाहिएं, क्योंकि दूध और मक्खन की हर जगह मांग रहती है।

कंडंस्ड-मिल्क लगभग २३·५३ लाख रुपए का सन् १९०८-९ में और २५·६२ लाख रुपए का सन् १९०९-१० में विलायत से हिन्दुस्तान में आया।

हिन्दुतान में दूध से खोआ, मक्खन, मलाई, छाना या छेना, दही, पनीर, घी वग़ैरा तयार करने का रोज़गार बहुत होता है मगर बेक़ायदा। इस के बड़े कारखाने कहीं नहीं है इसी से न तो चीज़ अच्छी व एकसां मिलती है और न रोज़गार में दम रह गया है। यह बहुत अच्छा और मुनाफ़े का रोज़गार है।

Millboards (मिलबोर्ड)—दफ़्ती का मोटा काग़ज, गत्ता, बोर्ड। घास, पुरानी रस्सियां, गूदड़ वग़ैरा से यह तयार होता है। उमदा काग़ज़ की तरह इसे साफ़ नहीं करना पड़ता गूदड़ की लेई को बेलनों के

बीच में दबा कर यह बनाया जाता है। किताब की जिल्द, कागज़ के बक्स, डब्बे, पेटियां इत्यादि इस से बनाई जाती हैं। बोर्ड कई तरह की मोटाई का बनाया जाता है। छापने के रफ कागज़ और पेस्टबोर्ड १०१.३० लाख रुपए के विदेशों से आए, बोर्ड का अलग हिसाब नहीं मिला।

अन्दाज़न् तीस पैंतीस लाख रुपए से ज्यादा का यह हिन्दुस्तान में बाहर से आता है।

Millet (मिलेट)—यह कई क़िस्म के अदना दरजे के ग़ल्ले का नाम है जैसे बाजरा (Bulrush, Cumboo or spiked millet)। चेना, सांवा, चैतवा (Common millet)। जुआर, चरी, करबी, शाल, जोंधला (Indian or Great millet, Guinea Corn or Turkish millet), कंगनी (Italian millet)। कुटकी, कुंगू इत्यादि (Little millet)। यह सब जिन्सें ग़रीब लोग खाते भी हैं और ज्यादातर मवेशियों को खिलाया जाता है।

Millinery (मिलिनरी)—लड़कों या स्त्रियों के पहिनने के कपड़े। तयार कपड़े, पोशाक वग़ैरा बेचने का रोज़गार उन बड़े शहरों में जहां अंगरेज़ लोग रहते हैं ज्यादा होता है।

Millstone (मिलस्टोन)—पत्थर की चक्कियां, चाक्कियों के पत्थर, पत्थर के कोल्हू। इस काम के पत्थर हिन्दुस्तान में कई पहाड़ों से निकाले जाते हैं, जैसे मिरज़ापुर के पहाड़ की चक्कियां बहुत अच्छी होती हैं। उन से रस पेरने के कोल्हू, आटा पीसने की चक्कियां इत्यादि बहुत बनती हैं। मिर्ज़ापुर का पहाड़ जहां पत्थर की खोदाई होती है वह गवरमेंट का है। इन पत्थरों के चलान से सरकारी महसूल लगभग ८५ हज़ार रुपया सालाना वसूल होता है।

Mineral Oil [मिनरल आयल]—खानिज तेल। Naphtha, Paraffin और Petroleum देखो।

Mineral Water (मिनरेल वाटर)—सोते का पानी, झरने का पानी। बाज़ सोते का पानी गंधक मिला रहने से बड़ा लाभकारी होता है

और दूर दूर बोतलों में बंद होकर जाता है। इन के पीने से स्वास्थ्य ठीक रहता है, कई बीमारियां दूर हो जाती हैं और हाजिम होता है। इस की मांग विलायतों में रहा करती है। हिन्दुस्तान में भी विलायतों से आकर बिकता है। हिन्दुस्तान में गोकि ऐसे झरने या सोते सिंध, बिलोचिस्तान वग़ैरा कई जगहों में है [खरकपुर के पहाड़ में 'सीताकुंड' मशहूर है] मगर अभी इस का इस्तेमाल व्यापाराना तौर पर नहीं होता।

अब कई तरह का मसाला देकर पानी तयार किया जाता है वह भी इसी नाम से मशहूर हैं, जैसे 'सोडा वाटर' (Soda Water), 'लेमोनेड' (Lemonade) 'जिंजर' (Ginger] इत्यादि।

Mineral white (मिनेरल व्हाइट)—शुद्ध सफ़ेदा। साफ़ किये हुए कारबोनेट आफ़ लेड (Precipitated Carbonate of lead) का यहें नाम है।

Minium—सेंदूर, सिंदूर। इसे 'रेड आक्ज़ाइड आफ़ लेड' (Red oxide of lead) भी कहते हैं। यह जरमनी में खास करके मिलता है और वहीं से आकर सब जगह बिकता है। इसे 'रेड लेड' (Red lead) भी कहते हैं। लाल रौग़न, फिंलट ग्लास और मट्टी के बरतन पर रंगसाज़ी करने का मसाला बनाने के काम आता है। हिन्दुस्तान में सोहागिन स्त्रियां इससे मांग भरती हैं या इसका तिलक लगाती हैं।

'सफेदा' (white lead) को आंच पर भस्म करते हैं इसका रंग हलका लाल हो जाता है और भस्म कुछ कच्चा रहता है इस लिये पानी में घोल देते हैं, कच्चा ऊपर तैरने लगता है, उसे अलग निकाल लेते हैं और जो नीचे बैठ जाता है वही सूखने पर 'म्यासीकट' (Massicot) कहाता है, इसका रंग नारंगी का सा मट्टल ज़र्द होता है। इसी 'म्यासीकट' को साफ़ करके और पीसकर ६०० से ६५० डिगरी तक की खूब कड़ी आंच में फिर भस्म करते हैं तब उसका रंग चटक लाल रंग हो जाता है, यह 'रेड लेड' (Red Lead) कहाता है और जब इससे भी ज्यादा कड़ी आंच दी जाती है तो

उसका रंग गहरा हो जाता है, इसका नाम 'मिनियम' (Minium) है। तेल की रंगीन वारनिश में रंग करने या उसे जल्द सुखाने के लिये मिलाया जाता है।

बाज़ार के घटिया सेंदुर में गेरू या ईंट का चूरा प्रायः मिला रहता है। अगर यह देखना हो कि सेंदुर शुद्ध है या उसमें किसी का मेल है तो (१) थोड़े से सेंदुर को मट्टी के सकोरे में तपाकर पानी मिले शोरे के तेज़ाब में घोले, अगर ईंट का चूर मिला होगा तो वह मेल न घुलेगा। (२) नमक के तेज़ाब में थोड़ा सेंदुर मिलाकर उबाले फिर उस में पानी मिलाकर उसे पतला करे और छान ले उस में कास्टिक सोडा पानी में घोल कर मिलाने से अगर गेरू होगा तो भूरी भूरी तलछट बैठ जायगी।

Mink (मिङ्क)—यह एक गोश्तखोर जानवर है जो अमेरिका, योरोप और एशिया में कई जगह होता है। इसकी पोस्तीन उमदा होती है। विलायत की लेडियां बहुत पहिनती हैं।

Mirbane (मिरबेन)—बादाम का बनावटी तेल। बेंज़ोल में नाइट्रिक एसिड (शोरे का तेज़ाब) का प्रयोग करने से तयार होता है। इसका इस्तेमाल खुश्बूदार साबुन बनाने के काम में होता है।

Mohair (मोहैर)—मोहैर का ऊन या पशम। 'अंगोरा' नामक भेड़ या दूसरी जाति की तिब्बती भेड़ों के लम्बे, मुलायम और घुंघराले पश्म को मोहैर कहते हैं—यह खास करके सफ़ेद रंग के और रेशमी तरह के चमक दमक वाले होते हैं। यह भेड़ें असल में एशिया माइनर की हैं, अब आस्ट्रेलिया, सौथ अमेरिका और कालीफ़ोरनियां में भी बहुत पाली जाने लगी हैं और वहीं से उमदा ऊनी कपड़े बनने के लिए ज्यादातर पश्म इंगलैंड में भेजे जाते हैं।

Moir (मॉयर)—एक क़िस्म का रेशमी कपड़ा जिसपर पानी के लहर की सी चमक हो। उमदा विने हुए रेशम के कपड़े को खूब तर करके बड़े इहतियात के साथ इस तरह तर करते हैं कि हर तह के ताने बाने एक दूसरे पर बराबर बैट जावें याने एकही सिम्त में एक दूसरे पर रहें,

इस बात का खयाल रक्खा जाता है कि एक तह के ताने के सूत दूसरे तह के ताने पर तिरछे न पड़ें। इसके बाद खूब भारी दबाव में रखकर कसने या शिकंजा कर देने से तहों के बीच की हवा निकल जाती है और पानी भी लहरियाता हुआ निचुड़कर बाहर निकल जाता है, इसका नतीजा यह होता है कि पानी का लहरियाता हुआ निशान उस कपड़े पर बाकी रह जाता है इसी निशान को अंगरेज़ी में वाटरिंग (Watering) कहते हैं और हिन्दुस्तानी में इसे 'आबरवां' 'नीर तरंग' कहना बेजा न होगा। इन लहरों पर रौशनी में एक अजब क़िस्म की चमक आ जाती है। इस क़िस्म के सबसे उमदा कपड़े 'मायेर अंटीक' Moir antique कहलाते हैं।

Molasses (मोलासेज़)—लपटा, चोआ, चोटा। राब या गुड़ बनाने में यह मैला शीरा बाक़ी रह जाता है। 'रम' नामक शराब बनाने में यह काम आता है।

Mora (मोरा)—मोरा। यह एक क़िस्म के पेड़ की लकड़ी है जो सख्त और चिकनी होती है और जहाज़ में लगाने के बहुत काम में आता है। यह पेड़ (Mora Excelsa) कहलाता है और टिनिडाड और बृटिश-गाइना में होता है। इस की छाल कसैली होती है और इस का कसाव चमड़ा बनाने के मतलब का है।

Morocco Leather (मोरक्को लेदर)—मोरक्को लेदर। बकरों के पोस्तीनों को 'ततरक या समाक' (Sumach) के कसाव में रंग और पकाकर तयार करते हैं। पहिले यह काम नार्थ अमेरिका में होता था, देखा देखी उस की नक़ल अब योरोप में बहुत होने लगी है बल्कि भेड़ के खालों से भी मोरक्को लेदर तयार किया जाता है।

Morphia (मार्फिया)—मरफिया। इसे 'मार्फ़िन' (morphine) भी कहते हैं। यह अफ़ीम का एक मशहूर सत है जो अमोनिया और कार्लिशयम क्लोराइड में अफ़ीम डाल कर निकाला जाता है और सफ़ेद क़लम या दाने की तरह का निकलता है जो पानी में कुछ कुछ घुल जाता है। यह बहुत तल्ख और ज़हरीली और नशीली चीज़